आज़ादी का अमृत महोत्सव

उच्च शिक्षा विभाग, उ.प्र. शासन, द्वारा प्रायोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी : मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics

दिनांक : 24-25 सितम्बर, 2022

ई-स्मारिका

स्थापना का 25वां वर्ष : रजत जयंती समारोह

:: आयोजक ::

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अलीगंज, लखनऊ- 226024

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

एवं

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ

संरक्षक :
प्रो0 अमित भारद्वाज
निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र.

अध्यक्षः
प्रो0 अनुराधा तिवारी, प्राचार्य

संयोजक
डॉ. राजीव यादव

आयोजन सचिव
डॉ. जय प्रकाश वर्मा

सह-संयोजक
डॉ. श्वेता भारद्वाज

सह-आयोजन सचिव
डॉ. रश्मि अग्रवाल

सह-आयोजन सचिव
डॉ. रोशनी सिंह

कोषाध्यक्ष
डॉ. भास्कर शर्मा

स्वागत संदेश–

प्रिय प्रतिभागीगण,

अतीव हर्ष एवं गौरव का विषय है कि भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से वर्ष 1997 में अभिसिंचित एवं स्थापित नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ वर्ष 2022 में अपनी स्थापना की रजत जयंती मना रहा है। रजत जयंती के इस गौरवपूर्ण अवसर पर महाविद्यालय सप्त-दिवसीय विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से अपनी अकादमिक, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा संबंधी सकारात्मक परिवेश को प्रदर्शित करने के लिए प्रतिबद्ध है जिसके कारण यह संस्थान उत्तर प्रदेश लखनऊ जनपद में शिक्षा जगत के एक देदीप्यमान प्रकाश पुंज के रूप में आलोकित है।

रजत जयंती उत्सव की इस श्रृंखला में **दिनांक 24-25 सितंबर, 2022** को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने एवं उनके अप्रतिम योगदान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी "भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत" विषय पर आनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यम से आयोजित किया जाना है।

भारत रत्न पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार भारतीय राजनीति में शुचिता, मानवीयता एवं सहृदयता के कारण सर्वमान्य नेता के रूप में लोकप्रिय रहे। वह राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं लोक-कल्याण को राजनैतिक उपलब्धियों से श्रेयकर मानते थे। वह स्पष्ट संदेश देते हैं कि हम सभी को सर्वप्रथम इन्सान बनना चाहिए, केवल नाम से नहीं, रूप से नहीं, शक्ल से नहीं बल्कि हृदय से, बुद्धि से और ज्ञान से भी। वह सत्ता के सुख के लिए मूल्यहीन तरीके से किसी लाभ के विरुद्ध थे। उनके विरोधी भी उनके राष्ट्रीय मूल्यों और राजनैतिक समन्वयता के मुरीद थे। वह संसद में गंभीर से गंभीर बात को काव्यात्मक तरीके से अभिव्यक्त कर देते थे जिससे विपक्षी दल भी उनके विचारों को गंभीरता से लेते थे। वह इस बात के हिमायती थे कि आदमी की पहचान उसके धन या पद से नहीं होती।

आदरणीय अटल जी अपने भाषण कौशल, हिन्दी भाषा मर्मज्ञता एवं काव्य हृदय के लिए भी विख्यात थे। संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुये उनका हिन्दी में भाषण देना, भारत को परमाणुशक्ति संपन्न राष्ट्र बनाना, पाकिस्तान के साथ संबंधों को सुधारने की पहल करना, कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय सेना का खुलकर समर्थन करना, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का विकास करना आदि पूज्य अटल जी को भारतीय जन-मानस के मध्य एक विचारशील राष्ट्रवादी जन नेता के रूप में स्थापित करते हैं। आदरणीय अटल जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वह भारतीय जनता पार्टी को आधारशिला से उठाकर गगनचुंबी उपलब्धियों के शिखर तक ले जाने वाले कर्मशील नेता के रूप में भी उभरे। वह तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने लम्बे समय तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ी हुई पत्रिकाओं राष्ट्रधर्म, पान्चजन्य आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अन्य पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वह एक लोकप्रिय हिन्दी कवि, लोकसमर्पित पत्रकार और प्रखर वक्ता भी थे। ऐसे मानवता, राष्ट्रवाद और राजनीति के अग्रणी और कालजयी अग्रदूत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से महाविद्यालय के रजत जयंती के अवसर पर हम श्रद्धा सुमन अर्पित करना चाहते हैं। अतः आदरणीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर विचार विमर्श करने हेतु भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में आप सभी का हार्दिक स्वागत है।

सादर,

आयोजन समिति

उपविषय :

- पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी तथा राष्ट्र की अवधारणाः वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां
- कर्म से समाधि तक की आत्म यात्रा : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
- भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी का योगदान
- अटल जी की राजनीतिक जीवन की उपलब्धियाँ
- राजनीति, राष्ट्रप्रेम एवं कविता : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
- राजनीति एवं मानववाद : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
- युवा अटल मानस से विश्व-फलक तक विस्तारः भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
- हिन्दी कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- अटल बिहारी वाजपेयी का काव्य संसार
- राष्ट्रप्रेम, कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- पत्रकारिता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य, वीर अर्जुन एवं अटल बिहारी वाजपेयी।
- हिन्दू धर्म एवं अटल विहारी वाजपेयी
- आतंकवाद एवं वर्तमान चुनौतियाँ अटल बिहारी वाजपेयी
- इतिहास, संविधान एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- भारतीय संसद एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- लखनऊ एवं अटल बिहार वाजपेयी
- ग्वालियर एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- अटल जी की राजनीतिक यात्राः कही अनकही
- भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेयी
- डॉ. श्यामा प्रसाद एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- भारतीय परमाणु परीक्षण एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- भारतीय विदेश नीति एवं अटल बिहारी वाजपेयी
- भारत-पाकिस्तान संबंध व अटल बिहारी वाजपेयी
- राष्ट्रीय स्वयं संघ एवं अटल जी
- संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अटल जी
- भारतीय जनसंघ एवं अटल जी
- भारतीय जनता पार्टी एवं अटल जी
- राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन एवं अटल जी
- कारगिल युद्ध एवं अटल जी
- रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया की मौद्रिक नीति एवं वर्तमान प्रासंगिकता
- भारतीय अर्थव्यवस्था और अटल जी का आर्थिक चिंतन
- स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना एवं अटल जी
- हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय
- राजनीति, समाज एवं राष्ट्र
- गठबंधन राजनीति एवं अटल
- राष्ट्रीय समीकरण व अटल जी
- बाबरी मस्जिद विध्वंस व अटल जी
- कंधार प्लेन हाइजैक व अटल जी
- छात्र-राजनीति एवं अटल जी
- शक्ति से शांतिः अटल बिहारी वाजपेयी
- भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः क्या खोया, क्या पाया
- न दैन्यं न पलायनः अटल बिहारी वाजपेयी
- Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, Concept of Nation : Present Scenario and Challenges
- Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: Life and Works
- Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee as Prime Minister
- Achievement of Atal Bihari Vajpayee as a Politician
- Politics, Nationalism and Poetry
- Politics and Humanism : Atal Bihari Vajpayee
- Hindi Kavita and Atal Bihari Vajpayee
- Literary world of Atal Bihari Vajpayee
- Financial Policies and Atal Bihari Vajpayee
- Foreign Policy and Atal Bihari Vajpayee
- Journalism and Atal Bihari Vajpayee
- Hinduism and Atal Bihari Vajpayee
- National Integrity, Terrorism and Atal Bihari Vajpayee
- History, Constitution and Atal Bihari Vajpayee
- Association of Atal Bihari Vajpayee with Lucknow, Gwalior
- Dr. Shyama Prasad Mukharji and Atal Bihari Vajpayee
- Indian Nuclear Power and Atal Bihari Vajpayee
- Monetary Policy of RBI and its Present Relevance
- NDA and Atal Bihari Vajpayee
- Bharti Janta Party and Atal Bihari Vajpayee

आयोजक मण्डल

संरक्षक :

प्रो0 अमित भारद्वाज, निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र.

अध्यक्षः

प्रो0 अनुराधा तिवारी, प्राचार्य

कार्यकारी समिति

डॉ. राजीव यादव, संयोजक
डॉ. जय प्रकाश वर्मा, आयोजन सचिव
डॉ. श्वेता भारद्वाज, सह-संयोजक
डॉ. रोशनी सिंह,सह-आयोजन सचिव
डॉ. रश्मि अग्रवाल, सह-आयोजन सचिव
डॉ. भास्कर शर्मा, कोषाध्यक्ष

महाविद्यालय आयोजन समिति

प्रो. संजय बरनवाल
डॉ. रश्मि बिश्नोई
डॉ. शरद कुमार वैश्य
डॉ. विवेक तिवारी
डॉ. सारिका सरकार
डॉ. शिवानी श्रीवास्तव
डॉ. पुष्पा यादव
डॉ. शालिनी श्रीवास्तव
डॉ. विनीता लाल
डॉ. सविता सिंह
डॉ. क्रान्ति सिंह
डॉ. राघवेन्द्र प्रताप नारायन
डॉ. पूनम वर्मा
डॉ. विशाखा कमल
डॉ. सपना जायसवाल
डॉ. ज्योति
श्री अरविन्द
ले. प्रतिमा शर्मा
डॉ. ऊषा मिश्रा
डॉ. पारुल मिश्रा
डॉ. मीनाक्षी शुक्ला
श्री राहुल पटेल
डॉ. विशाल प्रताप सिंह

शोध सारांश / शोध-पत्र / आलेख प्रेषण

चयनित शोधपत्रों, आलेखों, संस्मरणों, स्वरचित कविताओं व स्केचेस (चित्र) को **आई.एस.बी.एन. युक्त** एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। उक्त संगोष्ठी में पंजीकरण, शोध-सारांश (300-400 शब्द सीमा) / पूर्ण शोधपत्र, आलेख (2500-4000 शब्द सीमा) प्रेषित करने की अंतिम तिथि 22 सितम्बर, 2022 निर्धारित है। पूर्ण शोध-पत्र टाइम्स न्यू रोमन फोंट साइज 12 अथवा कृति देव 010 फॉंट साइज 14 में एम.एस. वर्ड फाइल पर प्रेषित करें तथा अपने मित्रों, सहयोगियों तथा शोधार्थियों को भी सहभागिता हेतु प्रेषित करें। छात्र-छात्राएं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी पर स्वरचित कविताएं एवं स्केच / चित्र प्रेषित कर सकते हैं। उत्कृष्टतम कविता एवं स्केच / चित्र को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया जाएगा।

महाविद्यालय के बारे में

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ नैक द्वारा ग्रेड-'बी' प्रत्यायित, लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एवं रूसा आच्छादित एक राजकीय महाविद्यालय है। इसकी स्थापना लखनऊ के तत्कालीन सांसद पूर्व प्रधान मंत्री, भारत रत्न, स्व. अटल बिहारी बाजपेयी के सद्प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को समुचित उच्च शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1997 में हुयी थी एवं भारत के स्वातंत्र्य-समर के अमर सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नाम पर नामकरण हुआ है। 90 छात्राओं से प्रारम्भ हुये महाविद्यालय में वर्तमान में स्नातक एवं परास्नातकस्तर पर लगभग 2500 छात्रायें अध्ययनरत हैं। वर्तमान में स्नातकस्तर पर कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों में 17 विषयों तथा परास्नातक स्तर पर पांच विषयों - समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान, प्रा. भा. इतिहास एवं जंतु विज्ञान में अध्यापन कार्य संचालित है। महाविद्यालय नैक के तृतीय चक्र में मूल्यांकन हेतु प्रयासरत हैं। महाविद्यालय में साधन सम्पन्न पुस्तकालय, नवाचार प्रकोष्ठ, सक्रिय आई.क्यू.ए. सी, नेशनल कैडेट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना, रेंजर्स, शोध विकास प्रकोष्ठ, इग्नू अध्ययन केन्द्र एवं कैरियर परामर्श एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ, महिला प्रकोष्ठ, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ आदि पूर्णतः क्रियाशील हैं जिससे महाविद्यालय अकादमिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों में लखनऊ जनपद में प्रख्यात है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

भाऊराव देवरस सेवा न्यास 29 दिसम्बर, 1993 को स्थापित एक सामाजिक, सांस्कृतिक गैर-लाभकारी संगठन है जो आर्थिक और सामाजिक तौर पर वंचित वर्गों के लिए उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक विकास के माध्यम से मुख्यधारा में आने के लिए मंच प्रदान करता है। श्रद्धेय भाऊराव देवरस की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित बैठक के दौरान इस न्यास की परिकल्पना की गयी थी और अटल जी इस न्यास के प्रथम अध्यक्ष बने थे। इस संगठन द्वारा विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ सेवा चेतना नामक एक अर्द्धवार्षिकी पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। साथ ही इस न्यास द्वारा सांस्कृतिक उत्थान के लिये विभिन्न संगोष्ठियों एवं कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है।

संगोष्ठी की संक्षिप्त कार्ययोजना

समय	शनिवार, 24 सितम्बर, 2022			रविवार, 25 सितम्बर, 2022		
	हॉल	स्मार्ट क्लास-1	स्मार्ट क्लास-2	हॉल	स्मार्ट क्लास-1	स्मार्ट क्लास-2
09.00-10.00 प्रातः	पंजीकरण					
09.30-10.00 प्रातः	जलपान			जलपान		
10.00-11.00 प्रातः	उद्घाटन			तकनीकी सत्र-3		
11.00-12.00 बजे	मुख्य वक्ता उद्बोधन			तकनीकी सत्र-4		
12.00-01.00 बजे	विशिष्ट वक्ता उद्बोधन			पोस्टर प्रस्तुति पी.जी. ब्लाक कौटिल्य कक्ष		
01.30-02.00 अपराह्न	लंच					
02.00-03.30 अपराह्न	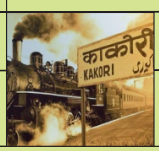	तकनीकी सत्र-1		विदाई सत्र/ पुरस्कार प्रस्तुतिकरण		
03.30-05.00 अपराह्न		तकनीकी सत्र-2				

पंजीकरण-

पंजीकरण हेतु लिंक- **https://seminar.nscbonline.in/**

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पंजीकरण शुल्क –

रु. 800.00 शिक्षक/फैकेल्टी

रु 500.00 शोधार्थी

रु 100.00 छात्र/छात्राओं

UPI

BHIM UPI Payments Accepted at
PRINCIPAL N.S. C.B.GOVT. GIRLS P.G. COLLEGE

Account Number : 62131796498, IFSC Code: SBIN0050826

लखनऊ शहर के बार में-

पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई श्री लक्ष्मण के नाम से स्थापित लखनऊ उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी है। लखनऊ के वर्तमान स्वरूप की स्थापना नवाब आसफुद्दौला ने 1775 ईसवी में की थी। अवध के शासकों ने इसको अपनी राजधानी बनाकर समृद्धि के मार्ग पर प्रशस्त किया। लखनऊ शहर अपनी गंगा-जमुनी तहजीब अवधी नजाकत बहुसांस्कृतिक विशेषता, दशहरी आम, बागों के शहर एवं चिकन की कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध है। गोमती नदी के किनारे बसा हुआ 'नबाबों के शहर' के रूप में लोकप्रिय यह शहर शिष्टाचार, साहित्य, संगीत एवं स्वादिष्ट व्यंजनों को आज भी संरक्षित किये हुये है। लखनऊ में स्थापत्य कला के विकास, मेट्रो ट्रेनों के संचालन और आर्थिक उन्नति के कारण यह शहर वर्तमान में तेजी से उभरता आधुनिक शहर के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहा है। लखनऊ शहर में हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रेजी को लखनवी अंदाज में बोला जाता है। लखनऊ के प्रमुख दर्शनीय स्थल- चौक, अमीनाबाद, हजरतगंज, जी.पी.ओ., कैथेड्रल चर्च, बेगम हजरत महल पार्क, बख्शी का तालाब, काकोरी, इमामबाड़ा, रूमी दरवाजा, छतर मंजिल, कुकरैल पार्क, जनेश्वर मिश्र पार्क, हाथी पार्क, बुद्ध पार्क, अम्बेडकर पार्क, कांशीराम स्मारक स्थल, रेजीडेंसी, दिलकुशा गार्डेन आदि हैं। लखनऊ में माह सितम्बर- अक्टूबर में हल्की गर्मी और सर्दी मिश्रित मौसम रहता है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

सारांश प्रेषित करने की तिथि	:	22 सितम्बर, 2022
पूर्ण रिसर्च पेपर प्रेषित करने की तिथि	:	20 सितम्बर, 2022

शोध-पत्र/सारांश प्रेषित करने हेतु
ई-मेल : netajiseminar2022@gmail.com

नोटः- छात्र/छात्रायें एवं शोधार्थी अपने विभागाध्यक्ष/प्राचार्य/शोध निर्देशक से संस्तुति-पत्र की प्रमाणित प्रति एवं परिचय-पत्र जमा करके सम्बन्धित लाभ ले सकते हैं। पंजीकरण शुल्क नकद/डिमांड ड्राफ्ट/ऑनलाइन माध्यम से निम्न विवरणानुसार जमा किये जा सकते हैं।

बैंक खाता विवरण

- खाताधारक : Principal, NSCB Govt. Girls P.G. College
- बैंक का नाम : State Bank of India
- खाता सं. 62131796498
- आई.एफ.एस.सी. कोड : SBIN 0050826
- शाखा : पुरनिया, अलीगंज, लखनऊ

सलाहकार समिति

प्रो. दिनेश शर्मा, सदस्य विधान परिषद, उ.प्र., पूर्व उप-मुख्यमंत्री, उ.प्र. सरकार।
प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, अध्यक्ष उ.प्र. उच्च शिक्षा परिषद, लखनऊ, पूर्व कुलपति बी.एच.यू. वाराणसी
प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
डॉ. नीरज बोरा, सदस्य विधान सभा, उ.प्र.।
श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई' जी, संस्थापक न्यासी, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ।
श्री ओमप्रकाश गोयल, अध्यक्ष, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ।
श्री राहुल सिंह, सचिव, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ।
श्री वीरेन्द्र कुमार, प्रबन्धक, सेवा चेतना, अर्द्धवार्षिक पत्रिका
प्रो. विजय कर्ण, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, नव-नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार।
श्रीमती बिन्दु बोरा, समाजसेविका, लखनऊ।
प्रो. बी.के. मोहन्ती, आई.आई.एम., लखनऊ।
प्रो. मनोज अग्रवाल, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
डॉ. मनोरमा सिंह, वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ।
प्रो. वाई.पी. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
प्रो. यू.के. सिंह, से.नि. प्राचार्य, महाराजा बिजली पासी राज. महाविद्यालय, लखनऊ।
प्रो. के.सी. वर्मा, संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र., प्रयागराज।
प्रो. बी.एल. शर्मा, सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र., प्रयागराज।
प्रो. जय सिंह, सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र., प्रयागराज।
प्रो. राजेश कुमार चतुर्वेदी, अपर सचिव, उ.प्र. उच्च शिक्षा परिषद, लखनऊ
प्रो. सुधीर कुमार चौहान, क्षे.उ.शि. अधिकारी, लखनऊ।
प्रो. ज्ञानप्रकाश वर्मा, क्षे.उ.शि. अधिकारी, वाराणसी।
प्रो. दिनेश चन्द्र शर्मा, राजकीय महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।
प्रो. परमोद कुमार, निदेशक, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ
प्रो. सी.एस. वर्मा, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ।
प्रो. आर.पी. सिंह, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
प्रो. विनोद श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. रा.म.लो. अ.वि.वि., अयोध्या।
प्रो. विनीता प्रकाश, प्राचार्य, आई.टी. कालेज, लखनऊ।
प्रो. मंजुला उपाध्याय, प्राचार्य, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ।
प्रो. सुमन गुप्ता, प्राचार्य, महाराजा बिजली पासी राज. महाविद्यालय, लखनऊ।
प्रो. अर्चना राजन, प्राचार्य, राजकीय महिला महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ।
प्रो. शहला नुसरत किदवई, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, महोना, लखनऊ।
प्रो. रबीन्द्र कुमार, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सीतापुर।
प्रो. मीनू सक्सेना, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, गोसाईखेड़ा, उन्नाव।
प्रो. सनातन नायक, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, बी.बी.ए. केन्द्रीय वि., लखनऊ
प्रो. रामपाल गंगवार, हिन्दी विभाग, बी.बी.ए. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ
डॉ. अजय कुमार सैनी, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, कुचलाई, सीतापुर।
डॉ. सीमा सिंह, प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महमूदाबाद, सीतापुर।
डॉ. अलका सिंह, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, रा.लो. रा. विधि विश्वविद्यालय, लखनऊ

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी : मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत

दिनांक : 24–25 सितम्बर, 2022

संरक्षक : प्रो0 अमित भारद्वाज, निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र.

अध्यक्षः प्रो0 अनुराधा तिवारी, प्राचार्य

संयोजक : डॉ. राजीव यादव

सह–आयोजन सचिवः डॉ. रश्मि अग्रवाल,

आयोजन सचिव : डॉ. जय प्रकाश वर्मा

सह–आयोजन सचिवः डॉ. रोशनी सिंह

सह–संयोजक : डॉ. श्वेता भारद्वाज

कोषाध्यक्ष : डॉ. भास्कर शर्मा

स्वागत समितिः

- डॉ. रश्मि बिश्नोई,
- डॉ. संजय बरनवाल,
- डॉ. शरद कुमार वैश्य,
- डॉ. पुष्पा यादव,
- डॉ. शिवानी श्रीवास्तव,
- डॉ. विवेक तिवारी

सत्र आयोजन समितिः

- डॉ. विनीता लाल,
- डॉ. रश्मि अग्रवाल,
- डॉ. पूनम वर्मा,
- डॉ. मीनाक्षी शुक्ला,
- डॉ. राघवेन्द्र प्रताप नारायण,
- डॉ. पारुल मिश्रा

रजिस्ट्रेशन समिति :

- डॉ. सारिका सरकार,
- श्रीमती प्रतिमा शर्मा
- डॉ. विशाल प्रताप सिंह,

प्रमाण–पत्र समिति :

- डॉ. क्रान्ति सिंह,
- डॉ. श्वेता भारद्वाज

बैठक व्यवस्था, साज–सज्जा एवं मंच प्रबंधन समिति :

- डॉ. शिवानी श्रीवास्तव,
- डॉ. अरविन्द,
- डॉ. सविता सिंह,
- डॉ. विशाल प्रताप सिंह,
- डॉ. ज्योति,
- डॉ. रोशनी सिंह,
- डॉ. श्वेता भारद्वाज,
- डॉ. राहुल पटेल

आतिथ्य एवं खान–पान समिति :

- डॉ. विशाखा कमल,
- डॉ. अरविन्द,
- डॉ. क्रान्ति सिंह,
- डॉ. उषा मिश्रा
- डॉ. सपना जायसवाल,

मीडिया समिति :

- डॉ. शरद कुमार वैश्य,
- डॉ. भास्कर शर्मा
- डॉ. संजय बरनवाल,

ई–स्मारिका संपादन समिति :

- डॉ. संजय बरनवाल
- डॉ. श्वेता भारद्वाज,
- डॉ. शालिनी श्रीवास्तव,

तकनीकी सहायता समितिः

- डॉ. अरविन्द,
- श्री राजकुमार वर्मा,
- श्री अमित राजशील,
- श्री सुनील वर्मा

एकमोडेशन एवं यातायात व्यवस्था समिति :

- डॉ. विशाल प्रताप सिंह,
- श्री रुद्र प्रताप शर्मा,
- श्री अमित राजशील,
- श्री राजकुमार वर्मा

पोस्टर, स्केच, मूल्यांकन समिति :

- डॉ. संजय बरनवाल,
- डॉ. श्वेता भारद्वाज,
- डॉ. विनीता लाल,
- डॉ. ज्योति,
- डॉ. पूनम वर्मा,
- डॉ. रोशनी सिंह

प्रोफेसर अनुराधा तिवारी
प्राचार्य

Technical Programme

Day 1, Saturday: September 24, 2022

Session andTime	
9:00 am-10:00 am	Registration & Breakfast
10:00 am-1:00 pm (College Auditorium)	Inaugural Session
➢ Welcome Speech by Prof. Anuradha Tiwari	
➢ Concept Note by Convenor (Dr. Rajeev Yadav)	
➢ Release of Book & Souvenir	
➢ Address by Keynote Speaker: Prof. Vijay Karn	
➢ Address by Distinguish Guest: Dr. Manorama Singh	
➢ Address by Guest of Honour: Dr. Neeraj Bora	
➢ Address by Special Guest: Prof. Alok Kumar Rai	
➢ Address by Chief Guest: Shree Yogendra Upadhayay, Hon'ble Minister, Higher Education, U.P.	
➢ Vote of Thanks by Organizing Secretary: Dr Jai Prakash Verma	
➢ Session Organizer: Dr Shalini Srivastava and Dr Shweta Bhardwaj	
1:00 pm-2:00 pm	Lunch
2:00 pm-3:30 pm (College Auditorium)	Technical session I Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee and Socio-Economic Humanistic Values *भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी और सामाजिक – आर्थिक मानवीय मूल्य*
➢ Chairperson: Prof. Manoj Agarwal (HOD, Deptt. of Economics LU) ➢ Co-chairperson: Dr. Sanobar Haider (Asso. Professor MBP Govt. PG College, Lucknow) ➢ Resource Person: Dr. Vineet Srivastava (Director, Dept of Economic and Policy Research, RBI) ➢ Resource Person: Dr. Subhash Mishra (Associate Professor, BBAU, Lucknow) ➢ Rapporteur: Dr. Archana Singh (Assistant Professor, RMP, PG College, Sitapur) ➢ Session Organizer: Dr Meenakshi Shukla and Dr Rahul Patel	
3:30 pm-5:00 pm (College Auditorium)	Technical session II Concept of Nation and Present Context *राष्ट्र की अवधारणा और वर्तमान संदर्भ*
➢ Chairperson: Prof. Brijendra Pandey, Politocal Sc, Vidyant PG College, Lucknow ➢ Co-chairperson: Dr. Deepak Kumar Singh (Associate Professor, DAV PG College, Lucknow) ➢ Resource Person: Dr. Shikha Chauhan (Assistant Professor, LU) ➢ Rapporteur: Dr. Sneh Lata Shukla (Assistant Professor, SBGC, Lucknow) ➢ Session Organizer: Dr Poonam Verma & Dr Arvind	

Technical Programme

Day 2, Sunday: September 25, 2022

9.00 am- 10.00 am	**Breakfast**
	Technical session III **Contribution of Atal Ji in Indian Politics and Scientific Advancement** **आदरणीय अटलजी का भारतीय राजनीति एवं वैज्ञानिक उत्थान में योगदान**
10:00 am-11:30 am **(College Auditorium)**	• **Chairperson: Prof. Manjula Upadhyay (Principal Navyug Kanya Mahavidyalaya Lucknow)** • **Co-chairperson: Dr. Satyaketu (Asst. Professor Dept. of Sanskrit & Prakrit Languases, University of Lucknow)** • **Resourse Person: Dr. Sharad Kumar Vaish, Asso. Professor, Dept. of Physics, NSCB Govt. P.G. College, Aliganj, Lucknow** • **Resource Person: Dr. Janhawi Ojha (Assistant Professor, Kalindi College, DU)** • **Resource Person: Dr. Alok Singh (Shaheed Rajguru College, DU)** • **Rapporteur: Dr. Divya Pal (Assistant Professor, Nari Shiksha Niketan, Lucknow)** • **Session Organizer: Dr Raghvendra P. Narayan & Dr Usha Mishra**
11:30 am-1:00 am **(College Auditorium)**	**Technical session IV** **Indian Literary, Cultural and Economic Contemplation and Atal Ji** **भारत का साहित्यिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक चितंन और आदरणीय अटल जी**
	• **Chairperson: Prof. C.S. Verma (GIDS, Lucknow)** • **Co-chairperson: Dr. Uma Singh (Assistant Professor, MBP Govt. PG College, Lucknow)** • **Resource Person: Dr. Harsh Mani Singh (Assistant Professor, ISPG College, Allahabad University)** • **Resource Person: Dr. Raghvendra Mishra (Assistant Professor, MBP Govt. PG College, Lucknow)** • **Rapporteur: Dr. Vishnu Mishra. Asst. Professor, GDC, Bangarmau, Unnao** • **Session Organizer: Dr Parul Mishra & Dr Vishal Pratap Singh**
1:00 pm-2:00 am	**Lunch**
2:00 pm- 5:00 pm **(College Auditorium)**	**Valedictory Session**
	Welcome of Guests with Bouquet and Memento
	Welcome speech by Principal: Prof. AnuradhaTiwari
	Seminar Report by Organizing Sercretary: Dr. Jai Prakash Verma
	Address by Guest of Honour: Shree Sakendra Pratap Verma
	Address by Distinguish Guest: Shree Ghanshyam Saahi
	Address by Chief Guest: Dr. Mahendra Singh
	Vote of Thanks by Convenor: Dr. Rajeev Yadav
	Session Organizer: Dr. Rashmi Agrawal & Dr. Roshni Singh
5:00 pm- 5:15 pm	**Hi-Tea and Goodbye with the hope of next conference**

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

20 सितम्बर, 2022

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ द्वारा अपने 25वें रजत जयन्ती वर्ष पर भाऊराव देवरस सेवा न्यास के सहयोग से 24–25 सितम्बर, 2022 को 'भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी : मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत' विषय पर दो द्विवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ई–स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा।

पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन से न केवल देशवासियों, बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित किया था। स्वर्गीय अटल जी के त्यागपूर्ण नेतृत्व ने अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर देश का जो मान–सम्मान बढ़ाया, वह सदैव स्मरण रखा जायेगा। स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का कालजयी व्यक्तित्व और कृतित्व हमारी युवा पीढ़ी के लिये प्रेरणा का स्रोत है।

ई–स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

योगेन्द्र उपाध्याय
मंत्री
उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी,
इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग

कक्ष सं0–63बी/डी, मुख्य भवन
विधान भवन, लखनऊ।
दूरभाष– 2238051(कार्या0)

दिनाँक– .....

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ भारत रत्न पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी को श्रृद्धा–सुमन अर्पित करते हुए अनके व्यक्तित्व एवं राष्ट्र सेवा में उनके योगदान को समर्पित एक द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"** विषय पर दिनांक 24–25 सितम्बर, 2022 को आयोजित कर रहा है।

आदरणीय अटल जी ने स्वयं–सेवक संघ प्रचारक की पृष्ठभूमि से यात्रा करते हुए देश के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया। इस जीवन यात्रा में उन्होंने राष्ट्र उत्थान हेतु अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया और मानवता राष्ट्रीयता और स्वच्छ राजनीति की कालजयी परिपाटी स्थापित किया जिसका युगों–युगों तक अनुगमन होता रहेगा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन एवं स्मारिका व पुस्तक के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(योगेन्द्र उपाध्याय)

प्रोफेसर अनुराधा तिवारी,
प्राचार्य,
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अलीगंज, लखनऊ।

REDMI NOTE 7 PRO
PRO 1

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति
Prof. Alok Kumar Rai
Vice-Chancellor

लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ–226007 (उ.प्र.) भारत
University of Lucknow
Lucknow-226007 (U.P.) India

Message

It is a pleasure to know that Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College, Aliganj, Lucknow, organizers **Two-Day National Seminar on "Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Imortal Herald of Humanism, Nationalism and Politics"** in collaboration with Bhaorao Devras Sewa Nyas, Lucknow to pay tribute to the contribution of Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, Former Prime Minister of India in shaping present India.

I hope that National Seminar will witness an enthusiastic participation from academicians, research scholars and students from different parts of country as the platform of sharing ideas about nationalism, politics and various policies of nation welfare in light of persona of Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee.

Best wishes for successful organization of the event and release of book and souvenir.

September 17, 2022

(Prof. Alok Kumar Rai)

Telephones : 0522-2740467 [O] 0522-2740462 [R] Fax: 0522-2740467 (O), 9415684935 (M), Email: vc@lkouniv.ac.i

डा0 अमित भारद्वाज
निदेशक उच्च शिक्षा, उ0प्र0

उच्च शिक्षा निदेशालय उ0प्र0
सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज–211001
0532.2623874 (का0)
0532.2423919 (फैक्स)
ई.मेल infodheup21@gmail.com

पत्रांक.....

दिनांक 23/09/2022

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ अपनी स्थापना का 25वॉ वर्ष रजत जयन्ती के रूप में मना रहा है तथा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं खेल तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु प्राप्त विद्वान शिक्षकों एवं शोधार्थियों के शोध पत्र एवं शोध सारांशों को संकलित कर प्रकाशित की जाने वाली ई–स्मारिका में मा0 अटल बिहारी वाजपेयी जी के आदर्शो से जुड़े संदर्भ सम्मिलित होंगे, जिससे महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों का ज्ञानवर्द्धन होगा तथा शोध में सहयोग प्राप्त होगा।

ई–स्मारिका एवं पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ0(अमित भारद्वाज)

प्राचार्य,
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अलीगंज, लखनऊ

0522-4001667
0522-4001638
0522-4001615
Extn No. : 26

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
GIRI INSTITUTE OF DEVELOPMENT STUDIES

(National Research Institute of ICSSR, Ministry of Education, GOI & Govt. of U.P.)
Sector O, Aliganj Housing Scheme, Lucknow-226024

Professor Parmod Kumar
Director

Ph.: 91-522-4001661
Mob.: 9810679420

Message

Date : .....

It is a pleasure to know that Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College, Aliganj, Lucknow, organises Two-Day National Seminar on "Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Imortal Herald of Humanism, Nationalism and Politics in collaboration with Bhaorao Devras Sewa Nyas, Lucknow to pay tribute to the contribution of Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, Former Prime Minister of India in shaping present India.

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee Ji was the great leader who gave the slogan of Jai Jawan, Jai Kisan, Jai Vigyan, He was one of the most powerful leaders of India. He was fond of Hindi Sahitya from his childhood. Being in class 10th he wrote a famous poem "Hindu Tan-Man, Hindu Jeevan, Rag-Rag Hindu Mera Parichay". He got arrested for 23 days in 1942 for Quit India Movement. He served as the 10th Prime Minister of India for six years from 1998 through 2004. He was the first-ever foreign minister of India who used total Hindi language in his speech in the UN General Assembly. 25th December, the birth anniversary of Late Vajpayee Ji is considered as Good Governance Day. Late Shri Atal Bihari Vajpayee was the only leader of India who got respects from every oppositional party too. As a Prime Minister, he had contributed a lot to the progress of the country. As being a journalist he was the editor of two monthlies of that time 'Rashtradharma' & 'Panchjanya'.

I hope that the National Seminar will witness an enthusiastic participation from academicians, research scholars and students from different parts of country as the platform of sharing ideas about nationalism, politics and various policies of nation welfare in light of persona of Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee.

Best wishes for successful organization of event and release of book and souvenir.

PARMOD KUMAR
DIRECTOR

21 September, 2022

डॉ0 मनोरमा सिंह
वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक
Dr. Manorama Singh
Senior Regional Director

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि, **''नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ एवं भाऊराव देवरस सेवा न्यास''**, के संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय अपनी स्थापना का 25वां वर्ष **''रजत जयंती''** के रूप में मना रहा है। वर्तमान वर्ष 2022 में कॉलेज परिसर में विभिन्न अकादमिक, सांस्कृतिक एवं खेल सम्बन्धी कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जा रही है। जिसके अन्तर्गत ***परम् पूज्य भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी, पूर्व प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी, द्वि-दिवसीय अटल अन्तर महाविद्यालय बैडमिन्टन प्रतियोगिता, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समागम उन्मेष–2022***, साथ ही छात्राओं द्वारा उद्यमी सोच को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शिनी का उद्घाटन तथा अटल जी से सम्बन्धित पुस्तक का प्रकाशन एवं संगोष्ठी ई–स्मारिका का विमोचन किया जा रहा है।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समर्पित **''भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी : मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत''** विषय पर आयोजित द्वि–दिवसीय (24–25 सितम्बर, 2022) राष्ट्रीय संगोष्ठी की ई–स्मारिका एवं पुस्तक की सफलता के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ। इस द्वि–दिवसीय संगोष्ठी के दौरान विचार–विमर्श छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी होगा, जो उन्हें भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन के बारे में जानकारी देगा।

मसिंह

(मनोरमा सिंह)

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ
IGNOU Regional Centre, Lucknow
Phone : 0522 - 2442832
E-mail : rclucknow@ignou.ac.in

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Open University | www.ignou.ac.in
5–सी/आई.एन.एस.–1, सेक्टर–5, वृन्दावन योजना, लखनऊ–226 029, उ.प्र., भारत
5-C/INS-1, Sector-5, Vrindavan Yojna, Telibagh, Lucknow-226 029, U.P., INDIA

DEPARTMENT OF ECONOMICS

University of Lucknow, Lucknow 226007 (India)
University of Lucknow Accredited A++ Grade by NAAC

Prof. Manoj Kumar Agarwal
Head

17.9.2022

Message

It is great pleasure to know that Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College, Lucknow is organising Two-Day National Seminar on ***Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanism, Nationalism and Politics*** in collaboration with Bhaorao Devras Sewa Nyas, Lucknow to pay tribute to the contribution of Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, Former Prime Minister of India in shaping present India. This is great tribute to Atal Ji who was the man behind establishment of this prestigious College and who was the first office bearer of the Bhaorao Devras Sewa Nyas.

I believe that this unique seminar dedicated to Atal Ji will be a great initiative where scholars of different fields would be participating and bring out the finer issues relevant for today's context when India is rapidly transforming. Atal Ji has been an enthusiastic statesman and development practitioner.

I extend my warm greetings and best wishes for the success of this National Seminar and publication.

(M.K. AGARWAL)

Prof. Anuradha Tiwari
Principal,
Netaji Subhash Chandra Bose
Government Girls P.G. College, Lucknow

Mob. : +91 8960066555, 9415102107, E-mail : mk.agarwal.lu@gmail.com

डॉ0 जय सिंह
सहायक निदेशक

उच्च शिक्षा निदेशालय उ0प्र0
प्रयागराज।
दूरभाष संख्या–0532–2623947
9369588140

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ अपनी स्थापना का 25वॉ वर्ष रजत जयन्ती के रूप में मना रहा है तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु प्राप्त विद्वान शिक्षकों एवं शोधार्थियों के शोध पत्र एवं शोध सारांशों को संकलित कर प्रकाशित की जाने वार्ली ई–स्मारिका एवं पुस्तक से महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों का ज्ञानवर्द्धन होगा तथा शोध में सहयोग प्राप्त होगा।

ई–स्मारिका एवं पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

प्रो0(जय सिंह)

प्राचार्य,
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अलीगंज, लखनऊ

प्राचार्य की कलम से

प्रिय सुधीजन,

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी से व्यक्तिगत सान्निध्य के क्षणों को स्मरण करते हुए उनके विराट व्यक्तित्व की अपलक झलक एवं ओजस्वी वाणी की अनहद गूंज आज भी मुझे रोमांचित करती हैं। उनकी उद्‌बोधन शैली में आकर्षणीय ठहराव, उनकी काव्यात्मक राजनैतिक टिप्पणियों की युगांतकारी हनक तथा उनकी मनोहारी सादगी उन्हें अपने युग का श्रेष्ठतम लोकप्रिय जननायक बनाती हैं। इन्हीं भावों के गहरे अन्तस्य से उपजे विचार में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जिनके अथक सद्‌प्रयासों से आंचलिक क्षेत्र की बालिकाओं की उच्च शिक्षा हेतु नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1997 में हुई थी, के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये प्रेरित किया। उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप महाविद्यालय सदैव समाधान खोजने के लिए तत्पर रहता है न कि समस्या और सीमित संसाधनों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है:

हाँ, खोज का सिलसिला न रुके,
धर्म की अनुभूति,
विज्ञान का अनुसंधान,
एक दिन, अवश्य ही
रुद्ध द्वार खोलेगा।
प्रश्न पूछने के बजाय
यक्ष स्वयं उत्तर बोलेगा।

यह हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय वर्ष 2022 में अपनी स्थापना की रजत जयंती मना रहा है जिसके अन्तर्गत श्रद्धेय अटल जी के व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास में उनके योगदान के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 24–25 सितम्बर, 2022 को किया जा रहा है जिसमें देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों से शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी सादर आमंत्रित हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–पत्रों के सारांश को ई–स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। संस्था के प्रमुख एवं आयोजन के सूत्रधार के रूप में मैं शिक्षाविदों, अतिथियों, वक्ताओं व प्रतिभागियों के प्रति कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

प्रो. अनुराधा तिवारी
प्राचार्य

संयोजक की कलम से,

प्रिय सुधीजन और विद्वत प्रतिभागियों,

परम श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के आकाश के वो ध्रुव तारे हैं जो चिरस्थायी, शाश्वत–आलोकित एवं अपने आस–पास के प्रकाश–पुंज के लिए भी अक्षुण्ण उर्जा–श्रोत होते हैं। सदैव अडिग, भयंकर से भयंकर तूफान जिसको डुबो न सके वो सर्व–कल्याणकारी नायकत्व पूज्य अटल जी के व्यक्तित्व में बचपन से ही दृष्टिगत रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में उनका कवि–मन सहज–उन्मुक्त भाव से हिंदुत्व को श्रेष्ठ मानव जीवन–शैली बताते हुए हिन्दू–राष्ट्रवाद को भारत के लिए अवश्यंभावी स्वीकार कर कह उठता है– **"हिन्दू तन–मन, हिन्दू–जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय"**। भारतीय जनता पार्टी को शून्य से शिखर तक पथ–प्रदर्शित करने वाले, तीन बार भारतीय लोकतंत्र के शीर्षस्थ प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करने वाले, संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी भाषा के परचम को लहराने वाले, संभावित हार को देखकर भी बिना विचलित हुए सत्ता को गैर–लोकतान्त्रिक तरीके से दावा न करने वाले, गठबंधन राजनीति को कुशलतापूर्वक उत्कृष्टतम साबित करने वाले एवं सभी दलों और वर्गों में समान रूप से सर्वमान्य लोकप्रिय जननायक राजनेता भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी केवल राजनीति में ही नही बल्कि भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य में भी अपना कालजयी स्थान स्थापित करते हैं।

लखनऊ संसदीय सीट से पांच बार लोकसभा सांसद रहे ऐसे अप्रतिम राजनेता के सद्प्रयासों से अलीगंज परिक्षेत्र के निर्धन और सामाजिक तौर पर पिछड़ी बालिकायों की सुगम उच्च शिक्षा हेतु स्थापित और स्वातंत्य–समर के अमर सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को समर्पित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ वर्ष 1997 की अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के सुअवसर पर सप्त–दिवसीय रजत जयंती समारोह मना रहा है जिसके उपलक्ष्य में ***"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी : मानवता, राष्ट्रप्रेम और राजनीति के कालजयी अग्रदूत"*** विषय पर द्विदिविसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 24–25 सितम्बर, 2022 को महाविद्यालय द्वारा भावराऊ देवरस सेवा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की जा रही है। उक्त अकादमिक मंच देश स्तर से विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों से पधारे विद्वतजन, शोधार्थियों, विद्यार्थियों और आम जनमानस के लिये आदरणीय अटल जी के विराट व्यक्तित्व तथा राष्ट्रहित में उनके योगदान के प्रति सच्ची श्रध्यांजलि अर्पित करने का सार्थक एवं सकारात्मक प्रयास है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में विमोचित की जाने वाली स्मारिका में अपना योगदान देने वाले, शोध–पत्र प्रस्तुत करने वाले समस्त प्रतिभागियों तथा अपने उद्बोधन के माध्यम से कार्यक्रम को वैचारिक स्वरुप प्रदान करने विशिष्ट वक्ताओं और सुधी श्रोतायों को मै संगोष्ठी के संयोजक और आयोजन मंडल की ओर हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता कि आप सब के गौरवपूर्ण सानिध्य में हम इस आयोजन के मूल उद्देश्य को अर्जित कर सके हैं।

राजीव यादव
संयोजक/असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अंग्रेजी

From the Desk of Organising Secretary

Welcome Friends !

Two-day National Seminar on "**Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanities Nationalism and Politics"** is going to jointly organised by Netaji Subhash Chandra Bose Govt. Girls PG College Aliganj, Lucknow and Bhaurao Devras Seva Nyas, Lucknow. Shri Atal Bihari Vajpayee was a pragmatist, orator, statesman and poet, a man of peace and conviction. He was a towering nationalist who softened the often sharp edge of his party's politics with a gentle sophistry of words, earning him the sobriquet "Ajaat Shatru" or the man with no enemies. He was the first prime minister from a non-Congress party to complete a full term in office. He served our nation as prime minister three times and provided a unique identity to our nation worldwide. Beginning his career from student activism and going through Rashtriya Swayamsewak Sangh as pracharak, Member of Parliament, Foreign Minister, opposition leader he reached to the pinnacle of public responsibility as prime minister and finally a much-loved leader of the nation.

Atal ji's signature in politics was achieving pragmatic consensus, and in this process he earned the respect of his party, allies and opponents. Abroad he projected a harmonious image of India and connected it to the world through his foreign policy outreach. His oratory was at its best in Hindi. With his well-timed wit, and carefully-chosen words delivered with trademark long pauses, Atal ji became the leader of common man.

This two day national seminar will cover all the aspects of Atal ji's life and his contribution to the nation. Being organising secretary of the programme I welcome the dignitaries, guests and participants two-day national seminar whose academic presence will enhance importance of the seminar.

Dr. Jai Prakash Verma
(Organising Secretary)

Table of Content

#	Paper Titles	Author	Page No
1	The Golden Quadrangle. The dream of Atalji has been realised	Dr Pratima Ghosh	1
2	Atal Bihari Vajpayee: A Legendary Diplomat	Dr. Manuka Khanna	1
3	Atal Bihari Vajpayee: A Gentleman Politician and Statesman	Dr. Sheel Dhar Dubey	2
4	Atal Bihari Vajpayee- A Statesman Par Excellence	Dr Sanobar Haider	2
5	Sri Atal Bihari Vajpayee: A Path-Maker and a Person of Vision and Fortitude'	Dr. Sarika Sircar	3
6	Sri Atal Ji: A maharishi of Indian Politics	Dr. Roshni Singh	3
7	Shri Atal Bihari Vajpayee: The Poet and The Politician	Dr Shweta Mishra	4
8	Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: Reformer of Modern India	Dr Shweta Bhardwaj	5
9	The Foreign Policy Legacy of Atal Bihari Vajpayee	Dr. Raveesh Kumar Singh	6
10	Incarnation of a Nuclear Nation: Remembrance of Sri Atal Ji	Sanjay Baranwal	6
11	Economic Reforms by Atal Bihari Vajpayee to revitalise Indian economy	Dr. Rashmi Agrawal	7
12	Atal Ji's Economic Vision for New India: India-China Relations under Atal Bihari Bajpayee Regime through the lens of Neo-Liberal Paradigm	Ashutosh Kumar Singh and Rani Gupta	8
13	Atal Ji's Economic Vision for New India	Jai Prakash Verma and Khushboo Verma	9
14	Atal Bihari Vajpayee's Selected Poems: An Analysis	Smt. Priyanka	9
15	Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics	Dr. Rajeev Yadav	10
16	Atal Bihari Vajpayee as a Journalist: A Research Study	Dr. Mahendra Kumar Padhy	11
17	Atal Bihari Vajpayee- An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics	Vivek Tewari	11
18	India's Nuclear Tests and Atal Bihari Vajpayee	Raj Kumar Singh	11
19	India-US Relationship under Atal Bihari Vajpayee Regime	Ritesh Kumar	12
20	Baharat Ratan Atal Bihari Vajpayee: A Visionary in a True Sense	Dr Aparna Sengar	12
21	Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee as Prime Minister	Dr. Shashi Kant Tripathi & Dr. Mukesh Srivastava	13
22	Atal Bihari Vajpayee: His Political Journey	Dr. Caroline Beck	13
23	An Ideal Opposition Leader in Indian Politics: Atal Bihari Vajpayee	Dr. Jitendra Kumar & Neha Verma	14
24	Realism in Literature in the works of Shri Atal Bihari Vajpayee	Dr. Neha Nagar	15
25	Indian Nuclear Power, Operation Shakti and Atal Bihari Vajpayee	Dr. Raghavendra Pratap Narayan	15
26	भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी: मानवता और राष्ट्रप्रेम के कालजयी अग्रदूत	डॉ0 उमा सिंह	16
27	भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ	डॉ0 विष्णु मिश्रा	16
28	अटल बिहारी वाजपेई का विकासवादी दृष्टिकोण: आर्थिक विकास के विशेष संदर्भ में	डॉ. विशाल प्रताप सिंह	17
29	अटल बिहारी वाजपेई: एक विराट व्यक्तित्व	डॉ. मीनाक्षी शुक्ला	17
30	भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई: राजनीतिक यात्रा	डॉ0 सुमन लता सिंह	18

31	अटल जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोंण	डॉ शरद कुमार वैश्य	19
32	भारत में लोकतंत्र, सुशासन, राष्ट्रवाद एवं अर्थव्यस्था: अटल बिहारी वाजपेयी की विचार दृष्टि	मुनेश कुमार	20
33	परम श्रद्धेय श्री अटल बिहारी बाजपेयी: हारी बाजी को जीतना जिसे आता था।	डॉ0 शिवानी श्रीवास्तव	20
34	भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई- एक उत्कृष्ट राजनेता	प्रोफेसर मीना कुमारी	21
35	अटल बिहारी बाजपेयी व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय	22
36	कर्म से समाधि तक की आत्मा यात्रा: भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी	हेमप्रिया, डॉ. दिलीप कुमार सिंह	22
37	आधुनिक एवं नवीन भारत के निर्माण में अटल बिहारी वाजपेयी का योगदान	डॉ० देवेन्द्र कुमार पाण्डेय	23
38	भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी: व्यक्तित्व एवं शैक्षिक योगदान	डॉ0 अल्का द्विवेदी	24
39	प्रधानमंत्री अटल बिहार वाजपेयी के अधिकारिक वक्तव्यों का विष्लेषणः सामाजिक न्याय एवं लोकतंत्र के विषेश संदर्भ में	चंद्रमणि राय	25
40	राजकोषीय नीतियाँ और अटल बिहारी वाजपेयी	डा0 ममता भटनागर	25
41	अटल जी का व्यक्तित्व कहती उनकी कविताएं	डॉ0 सविता सिंह	25
42	भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी तथा राष्ट्र की अवधारणा: वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां	डॉ0 ऊषा देवी वर्मा	26
43	हिन्दी कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी	डॉ0 कुसुम लता	27
44	श्री अटल बिहारी वाजपेयी- व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ राघव कुमार झा, असि0 प्रो0 संस्कृत विभाग	27
45	राष्ट्र सर्वोपरि की अटल मिसाल एवं मशाल	डॉ मोहम्मद आल अहमद	28
46	अटल बिहारी वाजपेयी जी के कार्यकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था	डॉ0 अशोक कुमार	29
47	भारतरत्न अटलबिहारी वाजपेयी: भारतीय राजनीति में अप्रतिम योगदान	डॉ0 सारिका सिंह	30
48	अटल बिहारी बाजपेई का व्यक्तित्व और कृतित्व	विशाखा कमल	30
49	शक्ति से शान्ति तक "अटल बिहारी बाजपेयी"	डॉ स्नेहा सिंह	31
50	साहित्य प्रेमी एक कवि- अटल बिहारी वाजपेयी	डॉ. ऊषा देवी	31
51	अटल जी का व्यक्तित्व युगों - युगों तक प्रासांगिक एवं अनुकरणीय	डॉ. उषा मिश्रा	32
52	भारतीय राजनीति एवं अटल बिहारी बाजपेयी	डॉ0 हिमांशु द्विवेदी	34
53	प्रखर राजनेता जन नेता अटल बिहारी बाजपेयी	डॉक्टर सीमा रानी	35
54	अटल बिहारी वाजपेई और मानववाद	-	35
55	अटल बिहारी वाजपेयी: बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी भारतीय, राजनीति के अजातशत्रु	मोनिका अवस्थी	36
56	हिन्दी साहित्य और अटलजी की कविताएं	डॉ०राघवेन्द्र मिश्र	36

The Golden Quadrangle. The dream of Atalji has been realised

Dr Pratima Ghosh
Assistant Professor
Navyug Kanya Mahavidyalay

Atal Bihari Bajpai has contributed towards important changes in the Indian Economy. As we all know disinvestment of public sector enterprises, GST farsightedness, foreign policy, insurance sector, Sarva shiksha abhiyan, FRBM, nuclear policy are many changes which were brought about when he was prime minister. Among these significant changes, the dream project of Atal ji was' The Golden quadrangle. The first section of the paper sets the hypothesis that the golden quadrangle has opened ways for the development of the underdeveloped regions of Uttar Pradesh. The second section sets the methodology of exploration of secondary data and calculation of growth rates. The final section presents the findings which suggest that the districts and the productivity of the regions within 0 to 10 kms of of the quadrilateral has increased tremendously. But the more distant areas need to be worked upon.

Keywords: Golden quadrangle, growth, development, manufacturing, transportation districts, sdgp.

❋❉❊❋❉❊

Atal Bihari Vajpayee: A Legendary Diplomat

Dr. Manuka Khanna
Department of Political Science
Lucknow University, Lucknow

Shri Atal Bihari Vajpayee, a skilful diplomat and consummate politician left a lasting imprint on India's foreign policy which he shaped as the first non-Congress Foreign Minister and later as a Prime minister. He navigated the country's complex foreign policy through the changing geopolitics of the late nineties. His vision for India was characterised by realism and idealism at the same time, both prefixed with a pragmatic approach that was aimed at furthering India's interests at the global level. While we see his realism in the expansion of the nuclear program for safeguarding security interests amidst global instability, his idealism is reflected in his agreeing to a "No First Use" policy.

India conducted the second series of nuclear tests at Pokharan in May 1998 during his tenure, which put his acumen to a severe test as the tests triggered a global reaction in the form of economic and military sanctions. In the aftermath of the tests his government faced the challenge of sanctions but he refused to surrender to global powers. Shri Vajpayee was convinced that a strong India will have to be respected by all and his conviction proved right. U. S. A. was forced to view India and South Asia seriously from a security and geopolitical perspective. This coincided with India's growing economic weight and influential role of Indian American community in the US, so India rose in American policy planning. Qualitative change in Indo -US relations was witnessed at this juncture. Foreign Minister of India, Jaswant Singh and US Deputy Secretary of State Strobe Talbot laid the foundation of a new phase of relations. After a gap of twenty two years a US President paid a visit to India .President Clinton's visit was reciprocated by the visit of Prime Minister Vajpayee to the US in September 2000. The new phase was visualized in 'India Relations: A Vision for the Twenty first Century'.

❋❋❋❋❋❋

Atal Bihari Vajpayee: A Gentleman Politician and Statesman

Dr. Sheel Dhar Dubey
Assistant Professor-Physical Education
Pt. Deendayal Upadhyay Govt. PG College, Lucknow.
E-mail- sheeldhar@gmail.com

Former Indian prime minister Atal Bihari Vajpayee is renowned for his political, literary, and professional achievements both in India and internationally. His major noteworthy accomplishments, prior to more than four decades of political participation and dynamic leadership, include his education at Victoria College (now Laxmibai) in Gwalior and DAV College in Uttar Pradesh, editing of several Indian periodicals, and composition of a variety of literary works. Vajpayee holds a Master of Arts degree in political science. He served as editor of the monthly Rashtra-Dharma, the weekly Panchajanya, and the daily Swadesh and Veer Arjun periodicals. His own major publications, including *Lok Sabha Mein Atajji, Mrityu Ya Hatya, Amar Balidan, Kaidi Kavirai Ki Kundalian, New Dimensions of India's Foreign Policy, Jana Sangh Aur Musalman, Three Decades in Parliament, Amar Aag Hai, Meri Ekyavan Kavitayen, and Four Decades in Parliament*, range from books to collections of poems and compilations of speeches. In the present paper I will discuss Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee not only as a politician but also as a true statesman of humanity and nationalist.

Keywords: Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, Humanitarianism, Nationalism and Indian Politics.

❋❋❋❋❋❋

Atal Bihari Vajpayee- A Statesman Par Excellence

Dr Sanobar Haider
Assistant Professor, Department of History
MBP Government PG College, Lucknow

Atal Bihari Vajpayee the former Prime Minister of India and a member of the Bhartiya Janta Party, is described as a Man of all Seasons by Kingshuk Nag a senior journalist in his book by the same title. Vajpayee was a man of many virtues and was one of the very popular leaders of his times.Apart from being a politician, and a brilliant orator he was also an acclaimed pen who composed a number of poems in Hindi. He is said to have joined the Quit India Movement in 1942 as a young pupil leader and exhibited sparks of leadership at a veritable young age. Vajpayee ji was a member of the Rashtriya Swayamsevak Sangh and worked as a journalist for a short period of time before he joined the Bhartiya Janta Party. He went to jail during the JP Narayan movement when emergency was declared by the Indira Gandhi government. He was awarded India's highest civilian honor Bharat Ratna in 2015 on his birthday for his exceptional contribution as a leader and statesman. He died on August 16, 2018 leaving behind a legacy of virtuous leadership, able statesmanship and unimpeachable integrity,a value which is becoming rare with each passing day.

❋❋❋❋❋❋

Sri Atal Bihari Vajpayee: A Path-Maker and a Person of Vision and Fortitude'

Dr. Sarika Sircar
Associate Professor, History
Netaji Subhash Chandra Bose Govt. Girls' P.G. College, Aliganj, Lucknow
Email: s.sarika70@gmail.com.

Sri Atal Bihari Vajpayee was a renowned politician and former Prime Minister of India who was known for his oratory skills, visionary thoughts, his political capabilities, his intellectual accomplishments, his concern for his fellow human beings and his genial human qualities. He served three terms as the Prime Minister of India and thus it is in the fitness of things to emulate and adorise him seeing his multifaceted personality and uniqueness as a person. He was one of the co-founders and a senior leader of the Bhartiya Janata Party. He was a member of the Rashtriya Swayamsevak Sangh, a Hindu nationalist volunteer organization. He was the first non congress Prime minister of India who completed full tenure of 5 years in PMO. He is famous for his poetry and writing skills and his oratory skills.

Keywords: Oratory skills, Visionary, Intellectual, Multifaceted Personality.

❋❉❊❋❉❊

Sri Atal Ji: A maharishi of Indian Politics

Dr. Roshni Singh
Assistant Professor, Zoology Department,
NSCB Govt. Girls PG College Aliganj Lucknow
Mobile: 8574289656, Email id: roshni.bhu@gmail.com

Excellence as a politician

He was the most respected politician of India. Atalji was a good orator who was not only appreciated by his own party members but also by opposition party members. Once Sonia Gandhi quoted him that Atalji is a good politician but in wrong party. In reply of that in parliament, Atalji remarked that what you will do with this good politician. He was a kind leader whom everyone wanted to listen him. Once Nehru, introducing Atalji to foreign delegates, said, "Meet this young promising fellow who is from opposition who has bright future in Indian politics".

Excellence as a foreign minister

After emergency and formation of Janta Party Government, Atalji became foreign minister of India. He was first to address UN in Hindi which is appreciated by all Indian people.

When Coalition government was at risk

It was the time when Indian politics saw failure of 6 coalition government (1977, 1989, 1990, 1996, 1997, 1998). All of them failed to sustain and fulfil the dreams of people of India due to over ambition of politicians. During this critical time of multiparty system and coalition government, he successfully completed 5-year government (1999-2004) and proved his leadership capability. He faced many hurdles in between them but he was able to fulfil the dreams of people of India.

Schemes that changed India

Atalji launched golden Quadrilateral project which connected India from north to south and east to west. After completion of this project successive governments realized the significance of this infra project which touched the heart of people of India. Even now every government has it's focus on road infrastructure. Atal Ji government's policies had made telecom sector accessible for Indians at every nook and corner. Every hand has mobile or phone booth across the India. Antyodaya Yojana was introduced by Atal Ji. Serve Shiksha Abhiyan was also introduced by Atalji government.

Manage foreign relationship

Atal ji built a very good relationship with China, Pakistan and others neighbours of India. He launched the bus service to the Pakistan so that the good relationship with Pakistan could spark peace in South Asia. He also tried to resolve Kashmir issue between India and Pakistan. Once he said about Pakistan that we can choose enemy and friend but we can't choose neighbours.

Final Remarks

Sri Atal Ji had a vision to empower India and to reach a stage where we could become self-reliant. His famous quote "I'm here with intention not with promises" truly replicate his way of working. He led the foundation of modern India and encouraged other politicians to think about prosperity and betterment of people of India. Lastly I want to read one of its poem:

ठन गई!
मौत से ठन गई!
जूझने का मेरा इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था
रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,
यों लगा ज़िंदगी से बड़ी हो गई
मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
ज़िंदगी-सिलसिला, आज-कल की नहीं
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?
तू दबे पाँव, चोरी-छिपे से न आ,
सामने वार कर फिर मुझे आज़मा
मौत से बेख़बर, ज़िंदगी का सफ़र,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर
बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,
दर्द अपने-पराए कुछ कम भी नहीं
प्यार इतना परायों से मुझको मिला,
न अपनों से बाक़ी है कोई गिला
हर चुनौती से दो हाथ मैंने किए,
आँधियों में जलाए हैं बुझते दिए
आज झकझोरता तेज़ तूफ़ान है,
नाव भँवरों की बाँहों में मेहमान है
पार पाने का क़ायम मगर हौसला,
देख तेवर तूफ़ाँ का, तेवरी तन गई,
मौत से ठन गई।

❋❋❋❋❋❋

Shri Atal Bihari Vajpayee: The Poet and The Politician

Dr Shweta Mishra
Assistant Professor, English
Maharaja Bijli Pasi Govt. P.G. College, Aashiyana, Lucknow

Shri Atal Bihari Vajpayee, one of the greatest politicians of India, was also a great poet. A statesman and a visionary, he was revered both by those of his party and those in opposition. If he were not a politician of India, then he would have been well-known as a forceful Hindi poet. The poetry of Atal Bihari Vajpayee focuses on Indian culture and tradition; it is fused with the patriotic fervour and is rooted in the Hindu philosophy. Atal Bihari Vajpayee's poetry deals with serious concerns and his poems are also quite motivational.

The purpose of this paper is to study this great personality who was a rare amalgamation of politics and poetry, and both flourished in him to excellence. The paper proposes to highlight the achievements of Shri Atal Bihari Vajpayee as a politician and also intends to study some of the famous poems that showcase his talent as a motivational orator and a flag bearer of the Indian philosophy.

❋❋❋❋❋❋

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: Reformer of Modern India

Dr Shweta Bhardwaj
Assistant Professor, Education
Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College, Aliganj, Lucknow, UP

"Empowering the individual means empowering the nation. And empowerment is best served through rapid economic growth with rapid social change."

-Atal Bihari Vajpayee

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee became tenth prime minister of India in 1996 and held this post for three non-consecutive terms in 1996, 1998-99, and from 1999-2004 and he proved that even coalition governments in the country can be run successfully. It can rightly be said that Vajpayee's vision and skill portrayed the Bhartiya Janta Party's image to the general public, and nearly after a decade, the Bhartiya Janata Party came to power with an unprecedented overwhelming majority. Today's economic development is repercussion of various noteworthy schemes launched by former Prime Minister during his tenure to rejuvenate Indian Economy. He led India to new heights by introducing a number of economic and infrastructural reforms. Vajpayee was the first non-Congress prime minister to complete full term of five years. But that was not his only achievement, despite more than a dozen unruly and demanding coalition partners, his bigger achievements were on the economic front-when he completed his five-year tenure as Prime Minister, the economy was in a great shape— GDP rate at 8%, inflation fell to 4% and foreign exchange reserves increased. During his tenure, India suffered an earthquake (2001), two hurricanes (1999 and 2000), a severe drought (2002-2003), an oil crisis (2003), the Kargil conflict (1999), Parliament Attack yet he was able to maintain a stable economy. The steps Vajpayee took on the economic front not only gave his party, the BJP, the image of a true economic right-wing hitherto viewed as a nativist party not comfortable with modern trends, but also put India on the road to later economic progress. Present article will try to enlighten some reforms made by Former Prime Minister Atal Bihari Vajpayee in shaping modern India.

❋❋❋❋❋❋

The Foreign Policy Legacy of Atal Bihari Vajpayee

Dr. Raveesh Kumar Singh
Assistant Professor-Sociology
Government PG College, Mahmudabad, Sitapur.
E-mail- dr.raveeshsocio@gmail.com

High international politics and diplomacy was, by all accounts, former prime minister Atal Bihari Vajpayee's enduring passion. A natural grand strategist, Vajpayee's realism was

tempered by restraint, leading him to craft a pragmatic foreign policy template for India that has endured till date. Put somewhat differently, far from being "asleep at the wheel"—as one scurrilous 2002 portrait of him put it—Vajpayee instinctively knew when to speed up India's quest for power and when to slow down so as to not overreach. This delicate balancing became most prominent in three interrelated set of events that he shaped: India's decision to unambiguously become a nuclear weapons state in 1998, the Kargil War of 1999, and the outreach to China soon after. The present paper deals with Vajpayee's approach towards Indian foreign policy and its uniqueness due to which it has an everlasting impact even today.

❄❄❄❄❄❄

Incarnation of a Nuclear Nation: Remembrance of Sri Atal Ji

Sanjay Baranwal
Professor, Political Science Department,
NSCB Govt. Girls PG College Aliganj Lucknow.
Mob: 9415358006, 8279972927, Email id: drsanjaybaranwal@rediffmail.com

"Strength respects strength". -Dr. APJ Abdul Kalam

Sri Atal Ji: An Asset to Nation:
Prime Minster of three terms and a recipient of three prestigious awards, Padma Vibhushan in 1992, best parliamentarian in 1994 and Bharat Ratna in 2015, Sri Atal Ji is aptly regarded as a "Man of Masses". As a parliamentarian, he had embellished the Indian polity for four decades.

Nuclear Weapon as Currency of Power:
Technological advancement in military field in 20th century witnessed the emergence of nuclear weapons fomenting fear, apprehension and arms race at planet earth. Nuclear weapon became new currency of power, prestige and security.

Incarnation of a NWS:
The entire world was completely surprised when India detonated five nuclear tests in 1998 under leadership of Sri Atal Ji and became 6th NWS (Nuclear Weapon State). India achieved a major technological marvel and miracle by becoming a NWS in the comity of nations on her indigenously developed nuclear program, without any theft or any clandestine collaboration.

Decision to go for nuclear test presupposed tremendous courage, boldness and firmness because anticipated sanctions from major countries of the world could have impacted Indian economy adversely which obviously was distasteful for native people. Lobby of Peaceful world also criticized nuclear tests advocating in country of Buddha, Asoka and Gandhi nuclear weapons were contrary to India's philosophy and values of peace and non violence.

Sri Atal Ji,s decisiveness, firm determination, courage and prudence and Statesmanship combined altogether, make him a great and visionary leader. Leadership traits of Sri Atal Ji were marvelous. His decision making capability was laudable.

Nuclear Security Scenario for India:

Security of India was endangered due to Chinese military ascendance, close military cooperation between China and Pakistan. NPT had got unconditional extension for ever without any pledge for nuclear disarmament. CTBT also proved to be a puzzle for the country.

Nuclear Test: 1974 and 1998:
Nuclear weapons of 1998 were technologically superior as India detonated not only fission device but fusion and low yield device as well. Ambiguity of the past was eradicated now.

Evolution of Nuclear Policy of India:

- Nuclear Weapon Option: Closed
- Nuclear Weapon Option: Opened
- Nuclear Weapon Option: Exercised

India's Nuclear Doctrine:

- Weapons for self-defence
- Unilateral and Voluntary Moratorium on further nuclear tests
- No First Use pledge against any NWS and non use against an NNWS
- Weapons for deterrence
- Nuclear triad
- Advocacy of global nuclear disarmament

Candid Remark of Sri Atal Ji to Parliament after Nuclear Tests:
Sri Atal Ji remarked, "India is now a Nuclear Weapon State. This is a reality that cannot be denied. It is not a conferment that we seek; nor is it a status for others to grant. It is an endowment to the nation by our scientists and engineers".

Insight and Discourse:

Nuclear tests under leadership of Sri Atal Ji boosted India's national security, national pride, her rightful place in the comity of nations and above all self reliance. Leadership traits, prudence and courage of Sri Atal Ji paved the way for Indo US Nuclear Deal in 2005 and NSG waiver for India in 2008.

Final Remarks:
A nuclear armed India is a historic and precious gift bestowed by Sri Atal Ji to the nation. It established India as a Self Reliant, Self Respecting and Strong State at world stage. Foreign policy of India saw a shift from idealism to realism under him. His motto "NA DAINYAM NAA PALAYANAM" (neither feebleness nor evasion) revives the ancient ethos of Indian bravery and characterizes his way of performance as a Prime Minister.

❊❉❊❊❉❊

Economic Reforms by Atal Bihari Vajpayee to revitalise Indian economy

Dr. Rashmi Agrawal
Assistant Professor, Commerce
Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College Aliganj Lucknow
E-mail: rashmiagrawal003@gmail.com

Prime Minister Atal Bihari Vajpayee's tenure must be acknowledged for the deep economic reforms in India. He took several decisions that had changed the face of Indian economy. Pokhran test, Serva Siksha Abhiyan for 6 to 14 year age of children, GST task

force, national highways development projects are some of big visionary decision of Vajpayee's government. He is well known for telecom revolution in India During his tenure several hurdles such as Kargil war(1999), earthquake(2001), hurricanes(2000) and oil crisis were there to crush the economy however, his economic efforts has led economy growth for subsequent government.

Keywords: economic reform, FRBM Act, GST, NHDP, Foreign Direct Investment (FDI), Disinvestment.

❋❋❋❋❋❋

Atal Ji's Economic Vision for New India: India-China Relations under Atal Bihari Bajpayee Regime through the lens of Neo-Liberal Paradigm

Ashutosh Kumar Singh[1] and Rani Gupta[2]

[1]Doctoral Fellow, Department of Political Science, Banaras Hindu University, Varanasi, U.P

[2]Doctoral Fellow, Department of Political Science, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh.

Atal Bihari Vajpayee Ji was multifaceted personality occupying different positions and different responsibilities in different phases of his long political career. Atal Bihari Vajpayee was not only a great politician but also the most skilful diplomat of India. He was the architect of India's China foreign policy as a member of parliament, as Minister of External Affairs, as leader of the opposition, and as Prime Minister of India. He played a significant role in the formulation, implementation, and institutionalization of India's China policy.

India and China are two ancient civilizations, with a long history of mutually beneficial exchanges over centuries. Today both are developing countries and the two most powerful Asian nations in terms of their economic and military capabilities, which are increasingly playing an important role in world politics. They have a tough rivalry between them based on different ideologies and ambitions. Both countries have nuclear weapons, burgeoning economies, and expanding military budgets, both seem to be vying for influence in the Indian Ocean, the Persian Gulf, Eastern Africa, and Central Asia. On 1 April 1950, India became the first non-socialist bloc country to establish diplomatic relations with the People's Republic of China. In 1954, the two countries jointly advocated the world-famous five principles of peaceful coexistence (Panchsheel) that laid a new foundation for India-China relations and ushered in the first climax of friendly relations between the two countries. After the 1962 war, the relationship between the two countries was profound. Although India and China had not broken off diplomatic relations, both sides withdrew their ambassadors and suspended all kinds of relationships including economic and cultural relations. In the mid-1970s, India-China resumed the exchange of ambassadors, and the two countries resumed direct trade and commerce. The Indian External Affairs Minister Atal Bihari Vajpayee made a path-breaking visit to China, which lead to the renewal of contact at the highest political level after two decades. This paper aims to analyze the India-China relations under Atal Bihari Vajpayee regime through the lens of the Neo-liberal paradigm.

❋❋❋❋❋❋

Atal Ji's Economic Vision for New India

Jai Prakash Verma[1], Khushboo Verma[2]
[1]Assistant Professor in Economics,
Netaji Subhash Chandra Bose Govt. Girls P G College,Aliganj, Lucknow
E-mail: jaygdc2012@gmail.com
[2]Assistant Professor in Applied Science & Humanities,
Faculty of Engineering & Technology, University of Lucknow, Lucknow
E-mail: 1986khushi@gmail.com

Visionary leader and former prime minister Shri Atal Bihari Vajpayee, was the forerunner for several economic reforms undertaken by his successors. Be it the Goods and Services Tax (GST), disinvestment programme of state entities or liberalisation of the insurance sector to allow private entities, Vajpayee was the man behind many key decisions. GST was implemented in India on July 1, 2017. However, it was Vajpayee who had first mooted the idea of a common tax structure for goods and services across the country. In 2000, the Vajpayee-led government had set up a committee to design the backbone of the GST model and ensure that the technology back-end was put into place. However, due to lack of consensus among the parties and individual states, the reform was delayed for as long as 17 years.

The mission to provide free and compulsory education to all children between 6 and 14 years of age was driven by the former PM. The primary objective of the scheme, which commenced in 2000-01, was to reduce dropouts and increase the net enrolment ratio at primary level. The government, under the former PM Vajpayee, enacted the Fiscal Responsibility and Budget Management (FRBM) Act in 2003. The Act had set targets to reduce fiscal deficits and boost savings in the public sector.

India boasts 984 million active wireless phone users (as of May 2018) and credit for the same should go to Vajpayee. In 1999, his government took a decision to end state monopolies for entities like Bharat Sanchar Nigam Limited (BSNL) and introduced a new Telecom Policy where a revenue-sharing regime was started. One of the flag-bearers of disinvestments in public sector undertakings, former PM Vajpayee had set up a separate department for disinvestment as early as 1999. Under his leadership, large disinvestment initiatives including that of Bharat Aluminium Company (BALCO) Hindustan Zinc as well as Videsh Sanchar Nigam Limited.

Keywords: Liberalisation, Disinvestment, GST, Fiscal Deficit, FRBM

❋❋❋❋❋❋

Atal Bihari Vajpayee's Selected Poems: An Analysis

Smt. Priyanka
Assistant Professor
Indira Gandhi Rajkeeya Mahila Mahavidhya, Raebareli

Indian prime minister late Shri Atal Bihari Vajpayee has written many poems. He wrote poems on patriotism, nationalism, valour and so on. Most famous poems are like 'Maut Se Than Gayi','Zindagi ke Dastavez', 'Os Chalna Hoga', 'Jeevan Ki Dhalne Lagi Sanjh', 'Itani Unchai Na Dena', and others. His poems or kavita's are a proof for society that if he were not into politics, but he would have been a renowned poet. 'Maut Se Than Gayee' or translated in English - 'Battle with Death'. He asked about death to not sneak up on him

head on. It is last battle with death. Atalji decided to let death have this victory, even if it is for amoment. He was a great Hindi poet, and also wonderful personality. His style of writing was simply amazing and understandable. 'Kadam Mila Kar Chalna Hoga' it was a motivational poem. These line's 'Chhote Man Se Koi Bada Nahin Hota', 'Aao Milke Diya Jalayen, 'Geet Naya Gata Hua', and many other have become immortal poems. He chose the subject matter of his poems related to life, death, nature etc. which are inspirational for human being. Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee is Immortal Herald of Humanity and themes of his poems are full with zeal and zest. The present research paper will analyse selected poems of Atal Bihari Vajpayee ji. It will also discuss his patriotism, happiness, delight, valour, passion, reality, nationalism in his several poems. Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics.

❋❄✳❋❄✳

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics

Dr. Rajeev Yadav
Assistant Professor, Department of English
Netaji Subhash Chadra Bose Government Girls PG College, Aliganj, Lucknow.
Email Id: ry9451@gmail.com

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee, former Prime Minister, Government of India, remained popular in Indian politics as a well-known leader because of his political purity, wide humanity and poetic kindness. He considered the replacement of moral values in politics and public welfare as creditable to political achievements. He gives a clear message that we all should become human beings first, not only by name, not by form, not by appearance but also by heart, intellect and knowledge. He was against any profit in a frivolous way for the pleasures of power. His opponents also admired his national values and political cohesion. He used to express the serious matter in the Parliament in a poetic manner, even the opposition parties also took his views seriously. He was an advocate of the fact that a man is not identified by his wealth or position. He was also famous for his speech skills, Hindi language penetrability and poetic heart. Representing India in the United Nations even being in opposition, his speech in poetic Hindi, making India a nuclear-powered nation, taking initiatives to improve relations with Pakistan, openly supporting the Indian Army during the Kargil War, developing the Golden Quadrilateral plan, etc. established him as a thoughtful nationalist mass leader among the Indian public mind.

Atal emerged as one of the founders of Bharatiya Jana Sangh and a hardworking leader who took the Bharatiya Janata Party from the cornerstone to the pinnacle of skyscraper achievements. He was the Prime Minister of India thrice. For a long time, he edited the magazines associated with the Rashtriya Swayamsevak Sangh, such as, the Rashtradharma, the Panchjanya etc., full of national spirit. He was also a popular Hindi poet, a dedicated journalist and a prolific speaker. Through the present research paper, I make sincere efforts in understanding the personality and invincible will power of Atal Bihari Vajpayee who is a pioneer humanitarian, nationalist thinker and unparallel political force in India.

Keywords: Atal Bihari Vajpayee, Humanity, Politics, Nationalism, Nation, Leadership.

❋❄✳❋❄✳

Atal Bihari Vajpayee as a Journalist: A Research Study

Dr. Mahendra Kumar Padhy
Associate Professor, Department of Mass Communication and Journalism,
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow.
Mobile: 6392180949, E.mail: mkpadhy2009@gmail.com

The research paper is an attempt to identify and delineate the Journalistic role of Bharat Ratna Mr. Atal Bihari Vajpayee. An acclaimed poet, brilliant journalist and an excellent orator, Mr. Vajpayee not only nurtured the his political party as a national party but also rose above the level of caste, community and party affiliations to emerge as one of the tallest leaders of the country. "Atalji has been a great inspiration for the entire nation. As Lucknow is also called his home, people here share a special bond with him. His lines, 'chhote mann se koi bada nahi hota, toote tan se koi khada nahi hota', define his persona. People from all walks of life, irrespective of political affiliation, address him with respect," - Tandon.

The paper examines the range of reported journalistic practices of Mr. Vajpayee and how they are attributed with different meaning, including their engagement with the concept of pleasure and its political participation. The study reveals that the journalistic pleasures associated with his career are often marginalized, and instead an ethical dimension is discussed with the help of different case studies.

Keywords: Ethical Journalism, Professional Journalist, Journalistic Pleasure, Political Participation, Ethical Dimension.

❋❉❋❋❉❋

Atal Bihari Vajpayee- An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics

Vivek Tewari
Ass. Prof. – Pol. Sc.
NSCBG PG College Aliganj, Lucknow

This Article Abstract portrays Atal Bihari Vajpayee as a central figure in Indian Politics who had a unique role in Quit India Movement (1942) and as a Hindu Nationalist provided an alternative discourse of Hindu Right Politics since post Independent India and challenged the hegemony of Congress Politics. The Article traces the historical context of Indian political discourse in a historical narrative and tries to figure Atal Bihari Vajpayee as an immortal herald of Humanity, Nationalism and Politics.

❋❉❋❋❉❋

India's Nuclear Tests and Atal Bihari Vajpayee

Raj Kumar Singh
Assistant Professor (Department of Sociology)
Kalicharan P.G. College, Lucknow
Email- rajeshsinghgrand@gmail.com

"You can change friends but not neighbours". This is a famous quote given by our beloved former prime minister Atal Bihari Vajpayee. This quote itself tells about the suspicion that he had in his mind regarding our two hostile neighbours- Pakistan and China. This

suspicion did not came by itself but had a strong backing, the four Indo-Pakistan and Indo-China war. His ideology was clear from the very starting- to extend the hands of friendship to our neighbours and at the same time be prepared for each and every situation for in the case anyone ditches. This ideology of him was bolstered and cemented after the wars with Pakistan and more so with the bigger neighbour- China. This is evident in his speech as the then Rajya Sabha MP and Bharatiya Jana Sangh (later Bharatiya Janata Party) leader where he said "The answer to an atom bomb is an atom bomb, nothing else", after China (two years after handing over India a major defeat), detonated a 16-kiloton bomb, in its first nuclear test, on 16 October 1964 and became the fifth nation to enter the exclusive nuclear-armed State club. As other leaders pondered for a solution, one man knew what had to be done. He was developing his novice thoughts of making India a nuclear capable country and making them headstrong in his mind, that too secretly.

❋❋❋❋❋❋

India-US Relationship under Atal Bihari Vajpayee Regime

Ritesh Kumar
Doctoral Fellow
Seminar Registration No. 2201046
riteshkumar.kumar952@gmail.com
Department of Political Science
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University

Atal Bihari Vajpayee during his tenure as the Prime Minister of India played a significant role in the development of better ties with all the major powers in the then global order. The interesting point to be noted here is that with reference to the United States the policy that Vajpayee tried to develop as the Foreign Minister of the Janata Party, continued its rhythm and took the relation to a new height. Vajpayee earnestly aimed for the economic development of India and he knew very well that this task was only possible by involving in bilateral relations with the developed countries.

❋❋❋❋❋❋

Baharat Ratan Atal Bihari Vajpayee: A Visionary in a True Sense

Dr Aparna Sengar
Associate Professor
Nari Shiksha Niketan PG College, Lucknow

In this globalised world, when the economy is open, a country standing isolated will not be able to survive. Thus, any country needs to build good international relations. Atal Bihari Vajpayee, a fore sighter, knew the importance of good foreign policy and therefore emphasised diplomatic relations with developed countries like the United States, Russia, Iran, Israel, East Asian and south-east Asian countries. Once Vajpayee said, "you can change your friends but not neighbours. This statement reflects the gravity of his understanding of the relations with our neighbouring countries. He was always in favour of talks to resolve any issue. He took the Delhi Lahore bus service to see his counterpart showing how he could go out of his way and follow unusual foreign policy measures to develop cordial relations with the neighbouring country. This step was the epitome of

international diplomacy. Vajpayee took a daring move to make India a nuclear weapons state against opposition from Western powers. Despite various economic and military sanctions, he refused to capitulate to the dictates of world powers and courageously confronted the sanctions challenge .this step was necessary to put India strategically vital in the international panorama. AB Vajpayee's contributions to India's foreign policy are invaluable. He planned for a long time ahead. Being a poet by heart, his administration shows diplomacy with a soft heart. In every way, he is a real statesman and a Bharat Ratna.

❋❋❋❋❋❋

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee as Prime Minister

[1]Dr. Shashi Kant Tripathi, [2]Dr. Mukesh Srivastava
[1]Associate Professor, P.G. Department of Commerce,
[2]Associate Professor & Ex-Head, P.G. Department of Commerce,
Vidyant Hindu P.G. College, Lucknow

Late Sri Atal Bihari Vajpayee ji was statesmanship personified, a parliamentarian par excellence and a democrate to the very core. When he became Prime Minister for the first time in 1996, he had assembled a team of almost twelve like-minded parties but he knew very well that he was very much short of majority and therefore when the opposition brought up a no confidence motion against his government, he did not hesitate to face the parliament and he replied to the acrimonions debate in a passionate manner and told that he may be high on the moral side but short on the numerical side and therefore he announced that he is going to submit his resignation to the President. This speech much appreciated even by the opposition leaders and the then speaker of the Loksabha Late Mr. P.A. Sangma said this is a great statement from a great statesman. In 1998 he again became a Prime Minister with the support of many parties right from Telgu Desham, AIDMK to Bahujan Samaj Party but Sri Atal ji in his second stint faced another problem where many parties demanded their Pound of flesh. Sri Atal ji was against this type of blackmail and asked the supporting parties to follow coalition ideals. The opposition got scent of the discontent among the coalition partners and brought up a no confidence motion. BSP which was nursing a deep rooted grudge against him decided to vote against him at the eleventh hour. His government was defeated but in the following election he came back with full majority with very friendly coalition partners and his government lasted full term of five years. During his regime his relations with all the opposition parties were friendly. On the International stage his stature rose multiple times and he forged friendly relations with all the neighbours. His Prime Ministership is one of the best period of contemporary modern Indian history.

❋❋❋❋❋❋

Atal Bihari Vajpayee: His Political Journey

Dr. Caroline Beck
Assistant Professor, Isabella Thoburn College, Lucknow.

A former veteran Indian politician Atal Bihari Vajpayee was the 10th Prime Minister of India. A Parliamentarian whose career stretches over four decades, Shri Vajpayee has been elected to the Lok Sabha (House of the People) nine times and to the Rajya Sabha (House of the States) twice, a record by itself. As India's Prime Minister, Foreign Minister, Chairperson of various important standing Committees of Parliament and Leader of the

Opposition, he has been an active participant in shaping India's post-Independence domestic and foreign policy. India's second highest civilian honour, the Padma Vibhushan, was conferred upon him in recognition of his selfless dedication to his first and only love, India, and his more than half-a-century of service to society and the nation. In 1994, he was named India's 'Best Parliamentarian.' The citation read: "True to his name, Atalji is an eminent national leader, an erudite politician, a selfless social worker, forceful orator, poet and litterateur, journalist and indeed a multi-faceted personality. Atalji articulates the aspirations of the masses, his works ever echo total commitment to nationalism.

Keywords-Indian Politician, Prime Minister, National Leader, Social worker, Best Parliamentarian.

❋❋❋❋❋❋

An Ideal Opposition Leader in Indian Politics: Atal Bihari Vajpayee

Dr. Jitendra Kumar[1] & Neha Verma[2]
[1]Assistant Professor, Department of Zoology,
Government Degree College, Kant, Shahjahanpur
Email: jkumar4683@gmail.com
[2]B.Ed. Scholar, Gyandeep Degree College, Newada, Tadiyawan, Hardoi

Atal Bihari Vajpayee was not only the first non-congress prime minister to serve a full five year term but also an ideal opposition leader whose influence on Indian Parliamentary system as well as parliamentarians, is impossible to quantified in words. He was a deep thinker, versatile genius, exceptionally gifted debater, poet of simple nature, eminent academician, brilliant political leader and an outstanding parliamentarian. He was elected ten times to the Lok Sabha and twice to the Rajya Sabha, the only parliamentarian to have been elected from four different states at different times- Balrampur (1957-1962 and 1967-1971) and Lucknow (1991-2009), Uttar Pradesh, Gwalior (1971–1977), Madhya Pradesh), Delhi (1977-1984) and Gandhinagar (1996-96), Gujarat. He was highly admired for his enlightening contributions to the deliberations of the house. He was an excellent speaker and debater, whose speech were listened with attention by parliamentarian friends and foes inside and outside parliament like melody. He was well known for his brilliant, strong, candid and highly researched arguments and legendry oratorical skill in the parliament. This article illuminates his firm and honest convictions, clear thoughts and creative ideas that made remarkable contributions in strengthening our parliamentary institutions and overall political development of our nation. Undoubtedly, Bharat Ratna Shri Atal Bihari Vajpayee was a great opposition leader and the brightest star in the galaxy of eminent parliamentarians, our country has produced.

Keywords: Parliament, Versatile genius, Firm and honest conviction, Eminent Parliamentarians, Debater.

❋❋❋❋❋❋

Realism in Literature in the works of Shri Atal Bihari Vajpayee

Dr. Neha Nagar
Assistant Professor English
Govt. Degree College Kuchlai, Sitapur

Society and literature present the exploration of necessitude, alterations, developments and differences of themes and literary ideas. Literature can be understood in its true sense as a complex explanation of literary work, encompassing in all its relationships. History, Culture, Language, identity, and Nationalism are supposed to be the major factors responsible for the development and change in society. Atal Bihari Vajpayee is a name which needs no introduction in our country and overseas. The present work examines realism in the light of the major writings of Shri Atal Bihari Vajpayee. His works are subjected to new interpretations to suit the changing needs of time. It has the strength of containing diagnostic, prognostic and prescriptive ideas. It is not for nothing that one of its prescriptive ideas. The present study deals with his ideas in new historicist way and leads toward meticulous significance.

❋❋❋❋❋❋

Indian Nuclear Power, Operation Shakti and Atal Bihari Vajpayee

Dr. Raghavendra Pratap Narayan
Assistant Professor-Botany,
Netaji Subhash Chandra Bose Government Girls PG College, Aliganj, Lucknow

Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee was known as an authoritative Statesman in Indian politics who surprised the nation and the world with his decisions. In his tenure as Prime Minister the India planned to be strong in Nuclear power. Under the assigned code name Operation Shakti, the nuclear tests were initiated on 11 May 1998, with the detonation of one fusion and two fission bombs. On 13 May 1998, two additional fission devices were detonated, and the Indian government led by Prime Minister Atal Bihari Vajpayee shortly convened a press conference to declare India a full-fledged nuclear state.

The nuclear tests caught the international community by complete surprise, taking into consideration the fact that a new government had just come into power a few months age. The harshest condemnation came from the United States and Pakistan. The Pakistani government sped up its own nuclear programme, conducting successful tests on 30 May 1998, while blaming India for escalating a nuclear arms race in the subcontinent. The United States condemned the nuclear tests and stated that in no uncertain terms that sanctions would follow. As a result, all aid to India, with the exception of humanitarian aid was terminated. Knowing fully well that such sanctions would be forthcoming, India stood its ground and still refused to sign the CTBT under the leadership of Atal Bihari Vajpayee, as it believed that such a treaty was against its national interests.

Atal Bihari Vajpayee was such a strong leader who led India at the front.

❋❋❋❋❋❋

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी: मानवता और राष्ट्रप्रेम के कालजयी अग्रदूत

डॉ0 उमा सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-संस्कृत
महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ
ई-मेलः drumasingh115@gmail.com

आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व के दो स्वरूप- सहृदयी दूरदर्शी राजनेता एवं संवेदनशील कवि – "काल के कपाल" पर उनको स्वर्णिम स्थान प्रदान करते हैं। मित्रों और विरोधियों द्वारा समान रूप से प्रशंसित अटल बिहारी वाजपेयी सच में एक जननायक हैं। राजनीतिक सफर का प्रारंभ भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक के रूप में करते हुये वर्ष 1960 के दशक के आखिर में वाजपेयी एक प्रमुख विपक्षी दल के सांसद के रूप में निखरकर सामने आये, जनता पार्टी की केन्द्र सरकार में विदेश मंत्री बने और 1999 में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार का नेतृत्व किया जिसने अपना कार्यकाल पूरा किया। यह उपलब्धि और विशिष्ट बन जाती है क्योंकि उनके नेतृत्व में वर्ष 1998 में गठित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने ऐसा कर दिखाया था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे जनसंघ के दिग्गजों के शिष्य रहे अटल बिहारी वाजपेयी जवाहरलाल नेहरू की प्रशंसा के पात्र बने जिनसे इंदिरा गांधी ने भी सलाह-मशवरा किया जिनकी आलोचना करने में वह कभी पीछे नहीं रहे। प्रस्तुत शोध-पत्र में अटल बिहारी वाजपेयी की साहित्यिक रचनाओं और कविताओं के विश्लेषण और आलोचनात्मक समीक्षा के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी के मानवतावादी और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दुः अटल बिहारी वाजपेयी, मानवतावाद, राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम, भारतीय राजनीति, संवेदनशील कवि।

❋❋✳❋❋✳

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ

डॉ0 विष्णु मिश्रा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-शारीरिक शिक्षा
इन्दिरा गाँधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांगरमऊ, उन्नाव
ई-मेलः vishnumishra2009.vm@gmail.com

भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी बचपन से राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की प्रारम्भिक इकाई से यात्रा करते हुये भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुये भारत के तीन बार प्रधानमंत्री बने किन्तु अपनी सम्पूर्ण राजनैतिक यात्रा में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की मूल भावना को उन्होनें कभी भी विस्मृत नहीं किया। राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक उत्थान उनकी विचारधारा के मूल तत्व रहे हैं जो उन्हें इस संगठन से प्राप्त हुये थे इसीलिये अटल जी के चिंतन और दार्शनिक पृष्ठभूमि को समझने के लिये उनका राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से उनके जुडाव को समझना अति आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र अटल जी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आपसी सम्बन्धों की विशलेषमकता समझने का सार्थक प्रयास है।

मुख्य बिन्दुः भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक उत्थान।

❋❋✳❋❋✳

अटल बिहारी वाजपेई का विकासवादी दृष्टिकोण: आर्थिक विकास के विशेष संदर्भ में

डॉ. विशाल प्रताप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

अटल बिहारी बाजपेई एक लोकप्रिय नेता तो थे ही परंतु उसके साथ ही साथ वे देश के आर्थिक विकास हेतु एक दूरदृष्टि भी रखते थे। देश के आर्थिक विकास और सुधार हेतु उनके द्वारा उठाए गए अनेक कदमों में उनकी यह दूरदर्शी दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, विदेश नीति का, दूरसंचार नीति या फिर प्रधानमंत्री सड़क योजना का विस्तार। प्रत्येक क्षेत्र में वाजपेई जी द्वारा उल्लेखनीय सुधार किए गए। इसके साथ ही उनमें राजभाषा हिंदी के प्रति विशेष लगाव भी देखने को मिलता है। अपनी कविताओं के माध्यम से वे जोश भर देते थे।

वाजपेई जी इस बात के पक्षधर थे कि व्यवसाय में सरकार की न्यूनतम भूमिका होनी चाहिए। इसी कारण उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान एक विनिवेश मंत्रालय की स्थापना भी की थी। वर्ष 2001 में प्रारंभ की गए सर्व शिक्षा अभियान को शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम कहा जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या में लगभग 60% की कमी देखी गई थी। इसके साथ ही वाजपेई जी के नेतृत्व वाली सरकार ने सड़क संरचना विकास के क्षेत्र में वृहद स्तर पर काम किया जिसके फलस्वरूप बड़े बड़े शहरों और गांवों को एक दूसरे से जोड़ा जा सका। आज भी जो एक्सप्रेस वे हम देखते हैं वे सब वाजपेई सरकार के समय की ही परिकल्पना है। वाजपेई सरकार की स्वर्णिम चतुर्भुज योजना और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने तो देश की आधारभूत संरचना को बदल कर रख दिया। छोटे से छोटा गांव भी सड़क योजना के द्वारा शहरो से जुड़ गया।

इसके अलावा उन्होंने राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए फिस्कल रिस्पांसिबिलिटी एक्ट बनाया जिसकी वजह से बचत में वृद्धि देखने को मिली।

❋❋❋❋❋❋

अटल बिहारी वाजपेई: एक विराट व्यक्तित्व

डॉ. मीनाक्षी शुक्ला
प्रवक्ता (हिंदी विभाग)
नेताजी सु. चं. बो. रा. म. स्ना. महा. अलीगंज, लखनऊ

भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेई जी का कीर्तिमान बहुआयामी व्यक्तित्व विश्व में अद्वितीय स्थान रखता है। उनके देश के प्रति किए गए कार्य मील के पत्थर हैं। वाजपेई जी का जीवन नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित था ।वह राजनीति में नैतिकता, शुचिता एवं सिद्धांतों के प्रति समर्पित कर्तव्यनिष्ठ राजनेता थे। उनकी छल प्रपंच से दूर पवित्र राजनीति को इस कथन द्वारा समझा जा सकता है जिसमें वे कहते हैं "सत्ता का खेल तो चलेगा सरकारें आएंगी जाएंगी, पार्टियां बनेगी बिगड़ेगी, मगर यह देश रहना चाहिए, इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।"सत्ता को उच्च आदर्शों के लिए त्याग देने वाले केवल वाजपेई जी ही हो सकते हैं।वे कहते है "पार्टी तोड़कर सत्ता के लिए नया गठबंधन करके यदि सत्ता हाथ में आती है तो मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा" (२८ मई 1996) ये है उनके नैतिक बल की पराकाष्ठा जिसमें 13 दिन की रही सरकार से उन्होंने इस्तीफा दे दिया था।

अटल जी जहाँ भारतीय राजनीति के श्लाका पुरुष थे वहीं वे एक संवेदनशील कवि भी थे। उनकी कविताएं वास्तव में उनका जीवन दर्शन हैं।उनकी कवितायें आशा, ओज, उत्साह, संघर्ष , बचैनी, अवसाद, राष्ट्रप्रेम, शौर्य, साहस, बंधुत्व इत्यादि अनेक भावों को समाहित किए हुए यथार्थ का चित्रण करती हैं। उनकी कविताएं अन्योक्ति की भांति संबंधित व्यक्ति या देश पर मारक प्रभाव छोड़ती हैं।वे बड़ी कुशलता और सहजतापूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति से विपक्षियों का भी मन जीत लेते थे।कहा जाता है कि अटल जी के विपक्षी तो थे पर विरोधी कोई नहीं था। उनका सभी सम्मान करते थे, ना केवल भारत में अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अटल जी के महान व्यक्तित्व की अमिट छाप थी। अटल जी की सर्वस्वीकार्यता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि वे विपक्षी नेता होते हुए भी तत्कालीन सरकार की ओर से सरकार का पक्ष रखने जेनेवा भेजे गए थे।पोखरण परमाणु परीक्षण हो या कश्मीर समस्या उनके

अटल निर्णय उनके नाम को चरितार्थ करते हैं। अटल जी का तेजस्वी ओजस्वी, महान, विराट एवं बहुआयामी व्यक्तित्व भारतीय नागरिकों के लिए एक आदर्श है।

❊❉❊❊❉❊

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई: राजनीतिक यात्रा

डॉ0 सुमन लता सिंह
वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर
खुनखन जी गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

भारतीय जनसंघ के संस्थापक भारत के तीन बार के प्रधानमंत्री रहे माननीय स्व0 श्री अटल बिहारी बाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर मध्य प्रदेश में हुआ था। वे हिंदी कवि, पत्रकार व एक प्रखर वक्ता थे। उन्होने लम्बे समय तक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। अटल जी देश के एकमात्र ऐसे राजनेता थे जो चार राज्यों उ0प्र0, गुजरात, मध्य प्रदेश, दिल्ली के छह लोकसभा क्षेत्रों लखनऊ और बलरामपुर, गाँधी नगर, ग्वालियर और विदिशा, नई दिल्ली संसदीय सीट की नुमाइंदगी कर चुके थे।

बाजपेयी जी 1942 में राजनीति में उस समय आए, जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके भाई 23 दिनों के लिए जेल गए। पहली बार 1952 में अटल जी ने लखनऊ लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा, पर उन्हे सफलता नहीं मिली। फिर 1957 में जनसंघ से उन्हे तीन लोकसभा सीटों लखनऊ, मथुरा और बलरामपुर से चुनाव लड़ाया। वह लखनऊ में फिर चुनाव हारे, मथुरा में उनकी जमानत जब्त हो गई लेकिन बलरामपुर संसदीय सीट से चुनाव जीतकर वे लोकसभा पहुँचे। 1968 में नानाजी देशमुख, बलराज मधोक तथा लालकृष्ण आडवाणी जैसे नेताओं के बीच से बाजपेयी जनसंघ के राष्टीय अध्यक्ष बने। 1971, के पांचवे लोकसभा चुनाव में बाजपेयी जी मध्य प्रदेश के ग्वालियर संसदीय सीट से चुनाव जीतकर संसद पहुँचे। आपातकाल के बाद हुए चुनाव में 1977 और 1980 के मध्यावधि चुनाव में उन्होनें नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। 1991 के आम चुनाव में आप लखनऊ और मध्य प्रदेश की विदिशा सीट से चुनाव लड़े और दोनों जगहों से विजयी हुये बाद में उन्होनें विदिशा सीट छोड़ दी। 1996 में जब हवाला कांड में अपना नाम आने से लालकृष्ण आडवाणी गाँधीनगर से चुनाव नही लड़ पाये तो उस स्थिति में अटल जी ने लखनऊ के साथ-साथ गाँधीनगर से भी चुनाव लड़ा और दोनों ही जगहों से जीत हासिल की। बाद में वाजपेयी जी ने लखनऊ को अपनी कर्मभूमि बनाया।

1977 में जनता पार्टी की सरकार जो मोरार जी भाई देशाई के नेतृत्व में बनी उसमें वाजपेयी जी विदेश मंत्री बने आप पहले ऐसे नेता थे जिन्होनें संयुक्त राष्टं महासंघ को हिन्दी भाषा में संबोधित किया। इसके बाद जनता पार्टी अंतर्कलह के कारण विखर गई और 1980 में वाजपेयी जी ने जनता पार्टी छोड़कर भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गए। वाजपेयी भाजपा के पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और काँग्रेस पार्टी के सबसे बड़े आलोचकों में शुमार किए जाने लगे 1994 में कर्नाटक, 1995 में गुजरात और महाराष्ट में पार्टी के चुनाव जीतने के बाद पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया। 1996 से 2004 तक तीन बार प्रधानमंत्री बने। हलांकि 1996 में उनकी सरकार 13 दिनों में संसद में बहुमत हासिल नहीं करने के चलते गिर गई। 1998 में दोबारा लोकसभा चुनाव में पार्टी को ज्यादा सीटें मिली और कुछ अन्य पार्टियों के सहयोग से वाजपेयी जी ने एनडीए का गठन किया और वे फिर प्रधानमंत्री बने यह सरकार 13 महीने तक ही चल पाई क्योंकि बीच में ही जयललिता की पार्टी ने सरकार का साथ छोड़ दिया। 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर सत्ता में आई और इस बार वाजपेयी जी ने अपना कार्यकाल पूरा किया।

❊❉❊❊❉❊

अटल जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोंण

डॉ शरद कुमार वैश्य
एसो0 प्रोफेसर (भौतिकी)
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला महाविद्यालय अलीगंज लखनऊ।

माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल बिहारी वाजपेई का भारतवर्ष के विकास में अमूल्य योगदान है। सौम्यता के प्रतीक माननीय अटल बिहारी वाजपेई जी ने न केवल अपनी कालजई रचनाओं द्वारा देश के आत्मसम्मान को बढ़ाया, वरन अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देश को एक मजबूत एवं विकसित भारत की दिशा में अग्रसर किया। माननीय अटल बिहारी वाजपेई जी ने प्रधानमंत्री रहते हुए भारत वर्ष को विज्ञान एवं तकनीकी की बुलंदियों तक अग्रसर करने का मार्ग प्रशस्त किया। यह अटल जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही था कि 1974 में पोखरण में परमाणु क्षमता का परीक्षण करने के 24 वर्ष बाद 11 व 13 मई 1998 को एक बार पुनः पोखरण द्वितीय के नाम से प्रसिद्ध परमाणु परीक्षण किया। इस परमाणु परीक्षण के लिए भारतीय वैज्ञानिकों ने माननीय अटल बिहारी वाजपेई जी के नेतृत्व में इस प्रकार की तैयारी की थी कि अंतिम क्षणों तक अमेरिका के सेटेलाइट या विश्व के किसी अन्य देश के उन्नत किस्म के सेटेलाइट इन तैयारियों को का पता न लगा सके और अंततः परमाणु परीक्षण करके देश का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया तथा भारत वर्ष को विश्व का छठा परमाणु सम्पन्न राष्ट्र घोषित करते हुए परमाणु सम्पन्न राष्ट्रो कि श्रेणी मे खड़ा कर दिया।

माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल बिहारी वाजपेई जी की टेलीकॉम नीति जो 1999 में आई, उसने दूरसंचार का क्षेत्र मे भारत में एक नई प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया जिसके कारण वर्तमान में संचार के क्षेत्र में भारत विश्व में उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। भारती एयरटेल के चेयरमैन एवं संस्थापक श्री सुनील भारती मित्तल ने माननीय अटल बिहारी वाजपेई के संचार के क्षेत्र में योगदान को देखते हुए उन्हें "फादर ऑफ मॉडर्न टेलीकम्युनिकेशन इन कंट्री" की उपाधि से अलंकृत किया है। माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल बिहारी वाजपेई की सरकार ने ही तत्कालीन दूरसंचार विभाग एवं भारत संचार निगम लिमिटेड को अलग-अलग करके निजी दूरसंचार कंपनियों को भी इस क्षेत्र में प्रवेश का मौका दिया जिसके कारण आज भारतवर्ष में मोबाइल धारकों की संख्या विश्व के किसी भी देश के मोबाइल धारकों की संख्या से अधिक है।

उन्होंने 2003 में 56 वें स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से भारतवर्ष के चंद्रयान मिशन की भविष्य की तैयारियों के विषय में बताया तथा घोषणा की कि 2008 तक भारत अपना स्वदेशी यान "चंद्रयान" चंद्रमा की सतह पर भेजने में कामयाब होगा। उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ कहा कि एक दिन भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेगा । इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी का सूत्रपात भी अटल जी के नेतृत्व में ही प्रारंभ हुआ। वर्तमान में भारत विश्व में इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी का हब बन गया है। माननीय अटल बिहारी वाजपेई जी ने महान वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम को अपना सलाहकार नियुक्त किया जो कि बाद में भारत के राष्ट्रपति बने। इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि हृदय प्रधानमंत्री माननीय स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी का ना केवल साहित्य व राजनीति वरन विज्ञान के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान है।

भारत में लोकतंत्र, सुशासन, राष्ट्रवाद एवं अर्थव्यस्था: अटल बिहारी वाजपेयी की विचार दृष्टि

मुनेश कुमार
शोधार्थी: पीएच-डी0
एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय माधवपुरम, मेरठ 250002 (उत्तर प्रदेश)
मो. 8273731770, ई मेलः kumarmunesh082@gmail.com

प्रस्तुत शोध पत्र अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व एवं विचारों पर केंद्रित है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक संस्कृति एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण स्थान तथा गंभीर प्रभाव रखने वाले अटल बिहारी वाजपेयी को भारतीय राजनीति में सभी महत्वपूर्ण दायित्वों में अपनी भूमिका निर्वहन के लिए जाना जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व महज उनके राजनीतिक नेतृत्वकर्ता होने तक सीमित नहीं था बल्कि वे एक ओजस्वी कवि, प्रांजल वक्ता, सहृदय व्यक्तित्व एवं राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के गंभीर, जानकार व विराट व्यक्तित्व हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की वैचारिक उपस्थिति भी उतनी ही सशक्त और महनीय है जितना उनका राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में अवदान। यह शोध पत्र भारत में लोकतंत्र, सुशासन, राष्ट्रवाद एवं अर्थव्यस्था पर उनकी वैचारिकी को समेटने का एक प्रयास है। अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व का प्रभाव व्यापक है। उनके निधन पर श्रद्धांजलि देते हुए भारत के शीर्ष नेतृत्वकर्ताओं, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों तथा सामाजिक जीवन के ख्यातिलब्ध लोगों ने उन्हें भारतीय अजातशत्रु, सभी के स्वीकार्य राजनेता, राजऋषि अटल जी, सर्वस्वीकृत अटल जी, युगपुरुष श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्वच्छ राजनीति के ध्रुवतारा, युगदृष्टा, दलों के नहीं दिलों के नेता, वैकल्पिक राजनीति के नायक, एक सच्चे जननायक, भारतीयता के प्रतीक, देशभक्त राजनेता, अमित अटल, कवि हृदय महामानव, सबके अपने, वक्ता सहस्त्रेषु आदि विशेषणों से नवाजा। वैचारिकी के स्तर पर भी अटल जी उतने ही महनीय हैं जितने राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में।

शोध पत्र लेखन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र को पूरा करने में विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, शोध प्रबंधों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का प्रयोग किया गया है।

संकेत शब्द- अटल बिहारी वाजपेयी, लोकतंत्र, सुशासन, भारतीयत्व, राष्ट्रवाद, सहमति की राजनीति।

❋❋❋❋❋❋

परम श्रद्धेय श्री अटल बिहारी बाजपेयी: हारी बाजी को जीतना जिसे आता था।

डॉ0 शिवानी श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग,
नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ।

अटल जी को 27 मई 1996 को भारतीय जनता पार्टी की लोक सभा में सबसे अधिक संख्या में सीट जीतने वाली पार्टी मानते हुए राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने सरकार बनाने का अवसर प्रदान किया था। पहली बार लोक सभा में भारतीय जनता पार्टी को इतनी अधिक संख्या में सीट प्राप्त हुई थी। बहुमत साबित करने के लिए प्रधानमंत्री श्री अटल जी के साथ कई दिग्गज नेताओं जैसे प्रमोद महाजन, मुरली मनोहर जोशी, भैरो सिंह शेखावत के एन गोविंदाचार्य, मदन लाल खुराना को 14 दिन का समय दिया गया। पार्टी को महसूस हो गया था बहुमत तो दूर उनको एक भी राजनीतिक दल का सहयोग नहीं मिल पाएगा।

परिस्थितियां विषम थी 27 मई 1996 को जब विश्वास मत प्रस्ताव पर वोटिंग की जानी थी बेहद कोलाहल पूर्ण वातावरण में चर्चा चल रही थी अटल जी ने इसे हार जाने के पद बजाए इस्तीफा देना स्वीकार किया। इस्तीफा देने के पूर्व सदन में दिया गया लगभग 1

घंटे का बेहतरीन भाषण जो उनके विशाल व्यक्तित्व की संपूर्ण व्याख्या करता है आज भी दयनीय राजनीति, स्वार्थ पूर्ण राजनीति और मूल्य विहीन राजनीति के लिए एक सबक है।

शांत स्वभाव और वाक पटुता में माहिर अटल जी ने रोष और क्रोध में रहते हुए भी संयमित भाषा का प्रयोग किया और राजनीतिक पार्टियों को तोड़ कर अपना बहुमत साबित करने के बजाए स्वस्थ और मूल्य परक राजनीति दिखाते हुए राष्ट्रपति जी को अपना इस्तीफा देने की घोषणा की।

बजपेयी जी को पता था कि संख्या बल कम होने के कारण विपक्ष उनको उखाड़ फेंक सकता है और उनके भाषण के दौरान निंदनीय भाषा का प्रयोग भी कर रहा था,लेकिन अटल जी अपने नाम के अनुरुप पूरे भाषण के दौरान अपना मजबूत पक्ष रखते हुए उन पलों को इस प्रकार यादगार बना दिया कि वह आज भी पक्ष और विपक्ष में प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा, "क्या हुआ आज हमारे साथ संख्या बल नहीं है मगर जहां आज हम पहुंच हैं वह 40 वर्ष की दिन रात की कठोर साधना और मेहनत का परिणाम है। अपने 40 वर्ष की विपक्ष की राजनीति का अनुभव बताते हुए उन्होंने दिलाया कि जहा आज आप बैठे हो वहां हम 40 वर्ष बैठ चुके हैं। मजबूत विपक्ष की भूमिका हमसे ज्यादा और कौन जान सकता है। सार्थक राजनीति के लिए एक मजबूत पक्ष विपक्ष और शांतिपूर्ण अर्थ पूर्ण चर्चा अति आवश्यक है। हम आपकी संख्या बल का सम्मान करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि सरकार को सही तरीके से चलाने के लिए हमारी पार्टी का पूरा सकारात्मक सयोग आपको मिलेगा। हम और मेहनत करेंगे और अपने को साबित करेंगे ।श्री अटल जी ने राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा सौपने की बात करते हुए विपक्ष पक्ष और संपूर्ण राष्ट्र को अपने ह्रदय बसा लिया। वास्तव में आज भी उनका कृतित्व अनुकरणीय है । शत शत नमन।।।।

❋❋❋❋❋❋

भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई- एक उत्कृष्ट राजनेता

प्रोफेसर मीना कुमारी
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग।
कालीचरण महाविद्यालय लखनऊ।

अटल बिहारी बाजपेई की सहजता केवल एक लिबास की तरह थी। वे गहन चिंतन करने वाले व्यक्ति हैं और वे समझते थे कि भारत में किसी भी सरकार को अपनी सफलता के लिए अनिवार्य रुप से मध्यम मार्ग ही अपनाना होगा। यह बात सदियों से सच होती आ रही थी। श्री बाजपेई ने अपनी लंबी राजनीतिक यात्रा में इसी मध्यम मार्ग को पकड़े रहने का प्रयास किया और किसी भी प्रकार की अतिवादिता से बचते रहे।इस प्रकार, वे भारतीय राजनीति के सदाबहार नायक बने,जिसे लगभग हर कोई चाहने लगा। बाजपेई एकआयामी व्यक्ति नही थे,राजनीति के अतिरिक्त, संगीत में उनकी गहरी दिलचस्पी थी और वे स्वयं एक कवि थे। वह अच्छे खाने के शौकीन थे और इन सबसे कहीं ज्यादा, अच्छे लोगों के बीच उठना-बैठना पसंद करते थे।

बाजपेई जी के शुरुआती राजनीतिक जीवन से ही तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं को यह एहसास हो गया था कि अटल में ऐसे गुण हैं, जो उन्हे सबके लिए स्वीकार्य बना देंगे। जवाहरलाल नेहरु ने उनकी महान क्षमता को पहचाना और अक्सर उन्हें निमंत्रण देकर तथा विदेशी हस्तियों से उनका परिचय करवाकर उन्हें आगे बढ़ाया, जबकि अटल तब पहली बार ही सांसद बने थे। अटल पर सबसे पहले जो राजनीतिक प्रभाव पड़ा, वह श्यामाप्रसाद मुकर्जी का था, जो जनसंघ के संस्थापक थे। यही नहीं, वह एक महान वक्ता थे। श्यामाप्रसाद की जल्द मृत्यु ने अटल को पहली पंक्ति में ला खड़ा किया; क्योकि यह माना गया कि एक महान वक्ता की क्षति को सिर्फ अटल ही पूरा कर सकते हैं। युवा अटल की किस्मत तब और चमकी, जब वे लंबे समय तक पार्टी सचिव रहे और दीनदयाल उपाध्याय का पूरा साथ मिला। दीनदयाल से अटल ने सबके लिए स्वीकार्य होने और उसके लिए आवश्यक नीतियों को लेकर संघर्ष के महत्व को समझा। प्रस्तुत शोधपत्र में अटल बिहारी बाजपेई के प्रारंभिक जीवन के साथ ही राजनीतिक जीवन के महत्वपूर्ण आयामों पर चर्चा की गई है।

❋❋❋❋❋❋

अटल बिहारी बाजपेयी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य इतिहास
राम भरोसे मैकूलाल महाविद्यालय, तेलीबाग लखनऊ

भारत के तीन बार प्रधानमंत्री रहने वाले श्री अटल बिहारी बाजपेयी का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में 25 दिसम्बर 1924 को ग्वालियर में हुआ था। इनके पिता कृष्ण बिहारी बाजपेयी एक शिक्षक और कवि भी थे। इनकी स्नातक की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज (वर्तमान में रानी लक्ष्मीबाई कालेज) में हुई। छात्र जीवन से ही ये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य बने और तभी से ही ये राष्ट्रीय स्तर की वाद विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। कानपुर के डी0ए0बी0 कालेज से इन्होने राजनीति शास्त्र में एम0ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। 2 इन्होनें विधि स्नातक की पढाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा के साथ संघ के कार्य में लग गये। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति की बारीकियाँ सीखी। बाजपेयी जी ने राष्ट्रधर्म दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य किया।

बाजपेयी जी भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वालों में से एक थे और सन् 1968 ये 1973 तक वे उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके थे। सन् 1952 ई0 में इन्होने पहली बार लोक सभा चुनाव लडा परन्तु सफलता नही मिली। सन् 1957 ई0 में बलरामपुर से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर लोकसभा में पहुँचें। सन् 1957 से 1977 तक बीस वर्ष तक लगातार जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। ये मोरार जी देसाई की सरकार में सन् 1977 से 1979 तक भारत के विदेश मंत्री रहे और विदेश में भी भारत की प्रगतिशील छवि बनायी। 1980 ई0 मे इन्होने जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर इसे छोड दिया और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में मदद की थी। 6 अप्रैल 1980 में बनी भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का दायित्व भी बाजपेयी को सौंपा गया।

❋❋❋❋❋❋

कर्म से समाधि तक की आत्मा यात्रा: भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

हेमप्रिया
पी.एचडी. शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
डॉ. दिलीप कुमार सिंह
शोध निर्देशक /असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
पं. राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर, अंबेडकर नगर

"उनकी वाणी इतनी मधुर
जैसे गगन में नीर जायें "संवर"
धीरे-धीरे शब्दों को रखे संजोकर
लगे हृदय से उनकी आवाज
सुकून मिले जो मन को सुनकर
हैं वो "अटलजी" का "प्रबलस्वर"!!
- लेखक द्वारा

अटल बिहारी बाजपेई जी जनताके लिए एक महान और बहुत ही प्रशंसनीय राजनेता थे। वे भारत की राजनीति में 5 दशक तक बने रहे अटल बिहारी वाजपेई जैसे नेता और किसी देश में नहीं थे। अटल जी तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं पहलीबार16 मई से 1 जनवरी 1996 तक, दूसरीबार1998 में और तीसरी19 मार्च 1999 से 22 मई 2004 तक इनसे पहले पी॰वी॰ नरसिम्हाराव, एच॰डी॰ देवगौड़ा

व आई०के० गुजराल प्रधानमंत्री थे। अटल बिहारी वाजपेयी जी अकेले ऐसे नेता है, जो प्रदेश में सांसद अलग-अलग स्थान पर रह चुके हैं।

अटल जी भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के बाद गांधी जी के साथ साथ हर समस्या का सामना डट कर किया। यहां तक कि गांधीजी और बाजपेयी (पीड़ा) भी साथ में सही। भारत छोड़ो आंदोलन के समय अटल जी भी 23 दिन के लिए जेल गए थे। तभी उनका पहला वार्तालाप डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी से हुआ। उनसे वार्तालाप के बाद अटलजी ने "भारतीय जनसंघ पार्टी" में हिस्सा लिया। 1951 में भारतीय जनसंघ पार्टी का गठन किया गया। अटल जी एक जाने-माने कवि थे जिन्हें लोग पढ़ना ज्यादा पसंद करते थे। यह अपनी कविताएं राजनीति पर भी लिखा करते थे। इन्हें भारतीय भाषा से बेहद लगाव था, और यह अपने भाषण असेंबली में हमेशा हिंदी में देना पसंद करते थे। 2005 में अटल जी राजनीति से संन्यास ले लिया।

❋❋❋❋❋❋

आधुनिक एवं नवीन भारत के निर्माण में अटल बिहारी वाजपेयी का योगदान

डॉ० देवेन्द्र कुमार पाण्डेय
असि० प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
गाँधी स्मारक त्रिवेणी पी०जी० कॉलेज, बरदह, आजमगढ।

वस्तुतः वक्त की निरन्तरता का एहसास एवं उसका तत्क्षण मूल्यांकन कर समय सापेक्ष, समयानुकूल कार्य करना स्वाभाविक ही नहीं अवश्यम्भावी होता है। तद्रूप कार्य करने से चतुर्दिक नवसृजन हेतु पथ प्रशस्त हो जाता है। नूतन सदी नवीनता, नवसृजन, नवस्वप्न, नवसंभावनाओं के साथ हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। नवयुग का आगाज होने वाला है। अधुनातन समय में 21वीं सदी में हम नवीन भारत के निर्माण हेतु गत पचास सालों का लेखा-जोखा लेने को उत्कंठित हैं, जो स्वाभाविक है कि हमारी दृष्टि इस तथ्य की ओर उन्मुख होगी, कि आखिर हमारी उपलब्धियाँ क्या हैं, जिससे हम अपने स्वप्नों को पूरा कर सकें। आज हम स्वाधीनता को शाश्वत एवं अमरता प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित हैं। हमारी सभ्यता और संस्कृति सहस्त्रों वर्षों से भी अधिक की प्राचीनता को आत्मसात् किए हुए हैं। अतएव भारत एक प्राचीन राष्ट्र है। जिसकी संस्कृति सनातन संस्कृति है किन्तु एक सार्वभौम सत्ता के अभाव के कारण भारत को एक संगठित राजशक्ति के रूप में स्थापित नहीं किया जा सका, एक सशक्त राज्य का स्वरूप न प्राप्त हो सका और देश विभिन्न राजों, रजवाड़ों और टुकड़ों में विभाजित रहा। सभी अपने-अपने परिवेश में खोए रहे, जिस कारण हम परास्त एवं पराजित हुए।

अधुनातन समय में शताब्दियों बाद लद्दाख से लेकर अण्डमान निकोबार तक यह समस्त भूमि एक झण्डे के नीचे संगठित हुई है। भारतीय गणराज्य अपनी सम्पूर्ण गौरव एवं गरिमामयी स्थिति के साथ खड़ा है, यह गर्व की बात है, जिम्मेदारी की बात है। अतएव इनकी सुरक्षा अपरिहार्य है और होनी भी चाहिए। देश सशक्त हो, समृद्धिशाली हो, सामाजिक समता हो, समरसता हो। यद्यपि हमारा देश अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण है तथापि इसमें अन्तर्विरोधों के मध्य से सामंजस्य एवं सौमनस्य सृजन की अद्भुत क्षमता है व अपार शक्ति निहित है।

यद्यपि विभिन्न विविधताओं से परिपूर्ण देश भारत हेतु अनेक भविष्यवाणियाँ की गई थी कि भारत एकरस नहीं रह सकेगा। पाँच सौ से अधिक रियासतों में विभक्त देश भारत के लिए मातम के मसीहा यह उद्घोषित कर रहे थे कि अंग्रेजों द्वारा एक विभाजन किया गया और दूसरा हम स्वयं करेंगे। उन तथाकथित भविष्यवाणियों पर पानी फेरते हुए हम एक गणराज्य का स्वरूप लिए सशक्त रूप में अपने अस्तित्त्व को कायम किए हुए है। यही हमारी उपलब्धियाँ हैं, जिसको निरन्तरता प्रदान करते हुए हमें अपना अमूल्य योगदान प्रदान करना है। इस हेतु अधुनातन शताब्दी में हमारा सतत् प्रयत्न है कि हम अपने आधुनिक एवं नवीन भारत के स्वप्न को साकार रूप प्रदान करने में अपना श्रेष्ठतम् योगदान दें।

वस्तुतः हमारी अनुपम उपलब्धि लोकतंत्र को संरक्षित करने की है। हमारा आचरण लोकतंत्र के अनुकूल है और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश होने के बावजूद हम लोकतंत्र को सरलता एवं सफलतापूर्वक आत्मसात् किए हुए हैं। इसी कारण हमारा देश दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में ख्यातिलब्ध है। हमने लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए सतत् प्रयत्न किया है तथापि

अनेक भविष्यवाणियाँ की गयी थी कि इतनी विविधिताओं से परिपूर्ण देश जहाँ शिक्षा का अभाव है, गरीबी की अतिशयता है, मताधिकार का उपयोग किस प्रकार होगा, जहाँ लोग मजहब के आधार पर विभिन्न रूपों में विभक्त हैं। हमने विविधताओं में एकत्त्व का प्रदर्शन करते हुए बड़े ही प्रभावशाली ढंग से मताधिकार का प्रयोग कर दुनिया को दिखा दिया है कि हमारी विविधता कमजोर न होकर, हमारी शक्ति का प्रतीक है। हमारी एकता को पुष्ट करने का सबसे बड़ा कारण और उपलब्धि का अधिष्ठान हमारा लोकतंत्र है जिसकी सफलता हेतु हम सतत् प्रयत्नशील हैं।

यद्यपि अटल बिहारी वाजपेयी अपने आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति सदैव अटल रहे है। सदैव संघर्ष हेतु उद्धत, किन्तु समझौते के द्वार खुले रखने वाले अटल बिहारी वाजपेयी लोकतंत्रीय राजनीति के शिखर पुरुष हैं। उनके चिंतन एवं चिन्ता का विषय सम्पूर्ण राष्ट्र रहा है। राष्ट्रहित को उन्होंने सदैव सर्वोपरि माना है। भारत एवं भारतीयता, सम्प्रभुता और सम्वर्द्धन की कामना को उन्होंने सदैव सर्वोपरि स्थान प्रदान किया। उनकी दृष्टि में, ''राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु यह अपरिहार्य है कि हमें राष्ट्र की स्पष्ट परिकल्पना को लेकर चलना होगा। राष्ट्र कुछ सम्प्रदायों और जनसमूहों का समुच्चय मात्र न होकर एक जीवमान इकाई होता है जिसे जोड़-तोड़कर निर्मित नहीं किया जा सकता है। उसका अपना अलग व्यक्तित्त्व होता है, जो उसकी प्रकृति के अधिष्ठान पर कालक्रम की फलश्रुति है। उसके घटकों में राष्ट्रीयता की यह अनुभूति, मातृभूमि के प्रति भक्ति, उसके जन के प्रति आत्मीयता तथा उसकी संस्कृति के प्रति गौरव के भाव में ही प्रकट होती है। इसी अधिष्ठान पर यह निर्णय किया जाता है कि कौन अपना है तो कौन पराया है, कौन शत्रु है तो कौन मित्र है, कौन अच्छा है तो कौन बुरा है और कौन योग्य है तो अयोग्य कौन है। जीवन की इन निष्ठाओं और मूल्यों के चतुर्दिक विकसित इतिहास राष्ट्रीयता की भावना को घनीभूत करता हुआ, उसे शक्ति प्रदान करता है। उसी से व्यक्ति को त्याग और समर्पण, पराक्रम और पुरुषार्थ, सेवा और बलिदान की प्रेरणा सतत् रूप से मिलती रहती है।

❋❋❋❋❋❋

भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी: व्यक्तित्व एवं शैक्षिक योगदान

डॉ0 अल्का द्विवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र
कालीचरण पी0जी0 कालेज, लखनऊ।
ई-मेलः dralka2005@gmail.com

दुनियाँ को छोड़कर सबको एक दिन जाना होता है परन्तु एक महान व्यक्ति अपने पीछे लोगों को हमेशा जोश से चलते रहने और जीवन के लिये संघर्ष करते रहने की प्रेरणा देकर जाता है। उन्हीं महान् व्यक्तियों में से एक, अटल जी की अपने कर्मों से देश को हमेशा आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देकर इस दुनियाँ को नीरस करके चले गए। मौत की उम्र क्या है ? दो पल भी नहीं, जिन्दगी सिलसिला, आज कल की नही। मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ, लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ ? अटल बिहारी बाजपेयी आज देश के प्रत्येक व्यक्ति का आदर्श है, उनका व्यक्तित्व हमेशा उत्साह से भरा हुआ था जैसा बनने की कामना हर कोई करता है। आज हम अपने शोधपत्र में ऐसे विराट व्यक्ति के व्यक्तित्व के विषय में चर्चा करेंगें और उनके शैक्षिक योगदान-सर्वशिक्षा अभियान के विषय में भी चर्चा करेंगे। उनके इस अभियान के माध्यम से 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को प्राथमिक स्कूल में मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित की गयी। प्रस्तुत शोधपत्र में भारत रत्न स्व0 अटल बिहारी बाजपेयी जी के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक योगदान के विषय में अध्ययन किया गया है।

❋❋❋❋❋❋

प्रधानमंत्री अटल बिहार वाजपेयी के अधिकारिक वक्तव्यों का विष्लेषण: सामाजिक न्याय एवं लोकतंत्र के विषेश संदर्भ में

चंद्रमणि राय
शोधार्थी (गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
दूरभाष: 6392431870/9670789899, Email-chandramanirai1995@gmail.com

प्रस्तुत शोध आलेख पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहार वाजपेयी के अधिकारिक वक्तव्यों के विश्लेषण के माध्यम से उनकी सामाजिक न्याय तथा लोकतंत्र सम्बन्धी दृष्टि का अनुसंधान करता है। यह शोध आलेख स्पष्ट करता है कि श्री वाजपेयी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन को पहली बार पूर्ण बहुमत प्राप्त करने तथा अपने शपथ ग्रहण के प्रथम दिन से ही भारतवर्ष को समृद्ध एवं गौरवशाली बनाने के लिए सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता, पंथनिरपेक्षता, लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, महिला शसक्तीकरण तथा भेदभाव मुक्त समाज के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध थे।

❋❋❋❋❋❋

राजकोषीय नीतियाँ और अटल बिहारी वाजपेयी

डा0 ममता भटनागर
एसोसिएट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग
विद्यान्त हिन्दू पी0जी कालेज लखनऊ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी भारतवर्ष के तीन बार प्रधानमंत्री बने। उनके और संघ की विचारधारा स्वदेशी होना भारतीय आर्थिक जगत में अनूठा प्रयोग था। उन्होंने स्वदेशी की भावना तथा स्वदेशी आर्थिक नीतियों को प्रोत्साहित किया और राजनीति उच्च नैतिक मूल्यों को स्थापित किया। उन्होने संतुलन की राजनीति का अनूठा प्रयोग प्रारम्भ किया। 1991 के बाद भारत की आर्थिक नीतियों में उदारवाद का दौर प्रारम्भ हुआ। अटल जी के समय 1999 से 2004 तक आर्थिक नीतियों को स्वावलंबी बनाने का भी प्रयास किया गया। उन्होने विनिवेश मंत्रालय का भी गठन किया। देश की आर्थिक नीति में मुद्रा स्फीति 4 प्रतिशत थी तथा विकास दर 8 प्रतिशत से ऊपर थी। उनके शासनकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली ही साथ ही उस समय की योजनाओं का लाभ आज तक अर्थव्यवस्था को मिल रहा है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का दृढ़ विश्वास था कि निर्माण और बुनियादी ढ़ांचा उन्नति के अग्रदूत हो सकते है। इसी के आधार पर उनकी राजकोषीय नीतियाँ आधारित रही। श्री अटल बिहारी वाजपेयी की आर्थिक नीतियों ने भारत को खुले बाजार में उड़ना सिखाया, उनकी परिकल्पना सदैव औद्योगिक विकास, 'सांस्कृतिक विकास', सामाजिक विकास एवं कृषि विकास के चारों ओर ही रहता था।

❋❋❋❋❋❋

अटल जी का व्यक्तित्व कहती उनकी कविताएं

डॉ0 सविता सिंह
सहायक आचार्य, शारीरिक शिक्षा
नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

भारत रत्न, श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी एक कुशल राजनेता, स्वच्छंद पत्रकार एवं संवेदनशील मन के ओजस्वी कवि थे। सच कहें तो वो नेता से ज्यादा कवि थे। कवित्व का गुण उनको विरासत में उनके पिता से मिला था। राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी उनके हृदयस्पर्शी भाव कविताओं के रूप में प्रकट होते रहे। उनकी कविताओं ने जनमानस में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और पाठकों द्वारा सराही गई। उनकी कविताओं में चिंतनशीलता, निष्पक्षता, निडरता, स्वाभिमान, देशप्रेम , त्याग, बलिदान, अन्याय के प्रति विद्रोह,

आस्था एवं समर्पण का भाव है एक साधारण अध्यापक के घर जनमे अटल जी अपनी प्रतिभा के दम पर विश्व भर में विख्यात हुए। सहृदय, दूरदर्शी राजनेता, संवेदनशील कवि, मित्रों और विरोधियों द्वारा समान रूप से चाहे जाने वाले अटल जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने के लिए वैसे तो उनकी राजनीतिक समझ, उनका मानवतावादी दृष्टिकोण, प्रगतिशील विचारधारा, आर्थिक व सामाजिक विकास का दृष्टिकोण जैसे हर पहलू को जानना होगा फिर भी अगर हम उनकी कविताओं का विश्लेषण करें तो बहुत से आयामों की झलक उनमें मिल जाती है और उनके व्यक्तित्व के बहु–आयामीपन को करीब से महसूस करा देती हैं उनकी कविताओं में से कुछ प्रमुख कविताएं जैसे, गीत नया गाता हूं, कदम मिलाकर चलना होगा, गीत नहीं गाता हूं,15 अगस्त का दिन कहता आजादी अभी अधूरी है, कौरव कौन पांडव कौन, दूध में दरार पड़ गई, मैंने जन्म नहीं मांगा, मौत से ठन गई जैसी कविताएं उनकी चिंतनशीलता, उदारता, समता, संवेदनशीलता जैसे उनके मन के हर भाव को प्रदर्शित करती है और उनके मानवता वादी, सरल, सहज, उदार व चुंबकीय व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है उन्होंने कई बार भारतीय संसद के सदन में भी कविताओं के जरिए पक्ष और विपक्ष के नेताओं का दिल जीत लिया था। अपनी कविताओं के बारे में उन्होंने एक बार कहा था- 'मेरी कविताएं मतलब युद्ध की घोषणा करने जैसी है, जिसमें हारने का कोई डर न हो. मेरी कविताओं में सैनिक को हार का डर नहीं बल्कि जीत की चाह होगी. मेरी कविताओं में डर की आवाज नहीं बल्कि जीत की गूंज होगी।

❋❋❋❋❋❋

भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी तथा राष्ट्र की अवधारणा: वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां

डॉ0 ऊषा देवी वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
वी.एम.एल.जी. कॉलेज, गाजियाबाद

प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी देश के मात्र ऐसे नेता थे,जो अपनी पार्टी में ही नही, विपक्षी पार्टी में सम्मानीय रहें। उदार, विवेकशील, निडर, सरल, रहज राजनेता के रूप में जहां उनकी छवि अत्यन्त लोकप्रिय रही, वही एक ओजस्वी वक्ता, कवि की संवेदनाओं से भरपूर उनका भावुक हृदय, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान व्यक्तित्व सभी को प्रभावित करता रहा। अपने प्रारम्भिक जीवन में छात्र नेता के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्ता रहे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के रूप में लखनऊ में इन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य एवं वीर अर्जन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया। सन् 1942 में अटल बिहारी बाजपेयी ने अपने राजनीतिक जीवन का सफर शुरु किया उस समय भारत छोड़ो आन्दोलन जोर शोर से चल रहा था, इस आन्दोलन मे उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे भारतीय जनसंघ के सस्थापक सदस्यों में एक थे और 1968 से 1973 तक उसके अध्यक्ष भी रहे। अटल बिहारी बाजपेयी प्रधानमंत्री रहते हुए राजस्थान के पोखरन में सन् 1998 में 11 और 13 मई को पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण करके देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनाया। यह एक साहसिक कदम था, जिससे हमारे देश को अलग पहचान मिली। परमाणु परीक्षण के बाद कुछ देशों ने अनेक प्रतिबन्ध भी लगाये परन्तु अटल जी इन सब की परवाह न करते हुए आगे बढ़े और देश को आर्थिक विकास की उँचाईयों तक पहुंचा दिये। 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर बस सेवा शुरू की गई, इस बस का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में बाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी सम्बन्धों में एक नयी शुरूआत की। राजधर्म को सर्वोपरि मानने वाले एवं उसका पालन करने वाले अटल बिहारी बाजपेयी को आज भी एक सशक्त नेता, मंत्रमुग्ध कर देने वाला वक्ता, कुशल प्रशासक, के रूप मे याद किया जाता हैं

❋❋❋❋❋❋

हिन्दी कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी

डॉ0 कुसुम लता
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चुनार, मीरजापुर
ईमेलः- kusumlata725@gmail.com

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 ई0 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा- दीक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में हुई थी। इन्होने राजनीति विज्ञान में परास्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अपना कैरियर पत्रकारिता में शुरू किया और पांचजन्य, राष्टधर्म इत्यादि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसप्रकार इनका झुकाव बचपन से ही समाज एवं देश के प्रति समर्पित रहा।

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। "मेरी इक्यावन कवितायें" अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले हैं। उनके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने-माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण काव्य रक्त इन्हे विरासत में मिला था। यही कारण है कि बचपन में ही उन्होने कविताएं लिखना प्रारम्भ कर दिया था। उनकी प्रथम कविता 'ताजमहल' थी। इसमें श्रृंगार रस के प्रेम प्रसून न चढ़ाकर बल्कि प्रगतिशील विचाराधारा एवं वीर रस प्रधान,तथा मुक्त शैली मे अपनी रचनाओं को लिखा। शोषित एवं मजदूरों के प्रति गहरी संवेदना इनके काव्य में दिखलाई पड़ता है। एक उदाहरण के माध्यम से इनकी कविताओं का मर्म समझा जा सकता है-''एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक''। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नही रह सकता।

❋❋❋❋❋❋

श्री अटल बिहारी वाजपेयी- व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ राघव कुमार झा, असि0 प्रो0 संस्कृत विभाग
अनिल कुमार, शोधार्थी
राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर उधम सिंह नगर (उत्तराखंड)

भारतीय संस्कृति के पुरोधा, राजनीति के दैदीप्यमान नक्षत्र, सरल, संवेदनशील, सहृदय व्यक्तित्व, भारत देश के एकमात्र नेता जो अपने दल में ही नहीं अपितु विपक्षी दलों में भी समान रूप से सम्मानीय रहे हैं। उदार, विवेकशील, निडर, सरल-सहज, राजनेता के रूप में जहाँ इनकी छवि अत्यंत लोकप्रिय रही है, वहीं एक ओजस्वी वक्ता कवि की संवेदनाओं से भरपूर इनका भावुक हृदय, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान इनका व्यक्तित्व सभी को प्रभावित करता है।

श्री अटल जी की लेखन क्षमता, भाषण कला को देखकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी और दीन दयाल उपाध्याय जैसे नेताओं का ध्यान इनकी और गया। अटल जी 'भारत छोड़ो आंदोलन' के भी एक अंग थे। कुछ समय पत्रकार के रूप में कार्य किया। वे एक अच्छे कवि भी थे। बाद में राजनीति से जुड़े। 'भारतीय जनता पार्टी' की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अटल जी ने अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग करके इस को मजबूत बनाया। अटल जी जन संघ के संस्थापक सदस्य रहे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे, संघ के मुख्यपत्र 'राष्ट्रीय धर्म' के संपादक रहे, काफी समय तक नेता प्रतिपक्ष, विदेश मंत्री और तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे।

अटल जी में अजस्वी कवि और प्रखर वक्ता के गुण जन्मजात कहे जा सकते हैं क्योंकि अटल जी की वंश परम्परा में भी यह गुण विद्यमान थे इनके प्रतीतामहः पंडित काशी प्रसाद वाजपेयी जी भी क्षेत्र के विख्यात विद्वान थे, पितामहः और पिताजी भी अध्यापन कार्यों में संलग्न थे। इसी के परिणाम स्वरूप अटल जी ने हृदयस्पर्शी और संवेदनशील कविताओं के द्वारा साहित्य जगत में अपनी

विशिष्ट पहचान बनाई, वहीं दूसरी ओर खास अंदाज और भाव-भंगिमाओं के साथ हृदय को स्पर्श करने वाले अद्भुत भाषण क्षमता के साथ चर्चित रहे।

अटल जी को 'शब्दों का जादूगर' कहा जाता था। एक बार लोकसभा अध्यक्ष अनन्त शयनम आयंगर ने कहा था कि, ''अटल जी हिंदी के सर्वश्रेष्ठ वक्ता हैं। वे बहुत कम बोलते हैं किन्तु जो बोलते हैं, वह हृदयस्पर्शी होता है। अन्तर्मन को स्पर्श करने वाला होता है।''

अटल जी एक निश्छलता से परिपूर्ण व्यक्ति के साथ ही लोकप्रिय जननायक भी हैं। इसी कारणवश भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह जी ने राज्य सभा में भाषण के दौरान अटल जी को भारतीय राजनीति का 'भीष्म पितामह' कहा था। अतः हम कह सकते हैं कि अटलजी शरीर से एक हैं परन्तु गुणों के अम्बार हैं। वह अध्ययन के एवरेस्ट की चोटी पर विराजमान हैं। वह मानवता के पुजारी हैं। सरस्वती उनकी जिह्वा पर सदैव विराजमान रही हैं। 'आज भी भारत के अनेक क्षेत्रों से ध्वनि उठती है कि अटल जी हमारे हैं।' उनके भाषण में लय, छंद, अलंकार, यति-गति भावभंगिमा आदि नेत्रों के सम्मुख चलते-फिरते चलचित्र के समान प्रतीत होते हैं।

अटल जी कहते हैं कि, "कविता वातावरण" चाहती है, कविता एकाग्रता चाहती है, कविता आत्माभिव्यक्ति का नाम है, और वह आत्माभिव्यक्ति शोर-शराबे में नहीं हो सकती।"

श्री अटल जी का सम्पूर्ण जीवन एवं सम्पूर्ण विचार सदैव राष्ट्र के लिए समर्पित रहे हैं। राष्ट्र सेवा के लिए इन्होंने ग्रहस्थ जीवन का त्याग कर कर्मनिष्ठ, निर्लिप्त छवि वाले राजनेता रहे। हिंदुत्ववादी होते हुए भी इनकी छवि धर्मनिरपेक्ष मानव की रही है। नेहरू जी ने इन्हें ''अद्भुत वक्ता की विश्वविख्यात छवि से सम्मानित किया था।'' आज यह महान आत्मा हमारे मध्य नहीं है, भारत ने अपना बहुमूल्य रत्न खो दिया है। अतः यह कमी हमेशा बनी रहेगी। दिनांक 16 अगस्त 2018 को नई दिल्ली में इनका स्वर्गवास हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। भारतीय राजनीति के प्रति उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। हमें उन पर गर्व है।

❋❋❋❋❋❋

राष्ट्र सर्वोपरि की अटल मिसाल एवं मशाल

डॉ मोहम्मद आल अहमद
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मुमताज पीजी कॉलेज, डालीगंज, लखनऊ
सम्पर्क 9651876962

राष्ट्र को प्रेम करना उसको सर्वोपरि मानने का अर्थ ही है उस में निवास करने वाले सभी लोगों का यथोचित सम्मान, सुरक्षा एवं अधिकार प्रदान करना ,हमारे देश भारत में ऐसा इसीलिए भी बेहद महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा देश भारत सभी स्तरों पर विविधताओं वाला देश है । स्वयं प्रकृति ने ही इसे अनेक प्रकार की विविधतायें प्रदान कर रखी है। भारत देश की भूमि पर कहीं तो मीलों तक मैदान है और कहीं घने जंगल, कहीं हरी भरी और बर्फानी पर्वतमालाएं है तो कहीं लंबे, चौड़े रेगिस्तान, कहीं पानी ही पानी है, हरियाली ही हरियाली तो कहीं रूखा-सूखा वातावरण ! प्रकृति की इस विविद्ता के कारण यहाँ अनेक भाषायें और बोलियाँ बोली, पढ़ी और लिखी जाती है। खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा में भी विविधता और अनेकता है। प्राय राष्ट्रीय पर्व, उत्सव, त्योहार, व्रत, उपवास है तो समान, पर उन्हें मनाने के रंग ढंग में स्थानीयता अवश्य देखी जा सकती है।

इतिहास के पन्नों पर राष्ट्र को समर्पित बहुत सी विभूतियाँ दर्ज हैं जिन्होंने देश की अखंडता हेतु विविधता में एकता को वरीयता देते हुए स्वयं का जीवन अर्पित कर दिया। इसी क्रम में आज हम एक महान विभूति का वर्णन करने की सदिच्छा रखते हैं जिनका नाम भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी है।

❋❋❋❋❋❋

अटल बिहारी वाजपेयी जी के कार्यकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था

डॉ0 अशोक कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-अर्थशास्त्र,
राजकीय महिला महाविद्यालय हर्रैया, बस्ती, उ0प्र0, भारत।
मो0-9453581941, ई-मेलः ashok.gdc1983@gmail.com

अटल बिहारी वाजपेयी जी को प्रमुखतया भारतीय राजनीति के कालजयी अग्रदूत के रूप में स्वीकार किया जाता है। उनके पास वाक्पटुता एवं एक कवि का विशाल हृदय विद्यमान था जिसके बल पर वह धुर विरोधियों को भी अपने स्नेह पाश में बांध लेते थे। देश को आर्थिक मजबूती देने के सम्बन्ध में भी उनकी दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट थी। वह जानते थे कि अर्थव्यवस्था की तरक्की के लिए उदारवादी नीतियों को आगे बढ़ाया जाना आवश्यक है, अतः उन्होंने स्वदेशी के खोखले नारों पर अधिक विश्वास न करते हुए उदारवादी नीतियों को आगे बढ़ाने का कार्य किया। इसी कारण से उदारवादी अर्थव्यवस्था के रूप में देश को विकास की पटरी पर दौड़ाने के लिए उन्होंने उदारवादी आर्थिक नीतियों के हिमायती श्री जसवंत सिंह जी को वित्तमंत्री के रूप में चुना था।

अटल जी के कार्यकाल में ही प्रथम बार विनिवेश मंत्रालय का गठन किया गया। इसका मुख्य उद्येश्य विभिन्न व्यापारिक एवं औद्योगिक गतिविधियों में सरकार की भूमिका को कम करना था। भारत एल्युमिनियम कम्पनी(बी0ए0एल0सी0ओ0), हिन्दुस्तान जिंक, इंडिया पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड तथा विदेश संचार निगम लिमिटेड(वी0एस0एन0एल0) का विनिवेश इसी दिशा में एक मजबूत कदम था। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से वाजपेयी सरकार का एक अन्य सराहनीय कदम राजकोषीय जवाबदेही एवं बजट प्रबंधन ऐक्ट(थ्पेबंस त्मेचवदेपइपसपजलंदक ठनकहमज डंदंहमउमदज ।बज.थ्ण्ण्ठण्डण् ।बज) का बनाया जाना एवं उसे लागू किया जाना था। इसका मुख्य उद्येश्य देश के राजस्व घाटे का समाप्त कर राजस्व अतिरेक की स्थिति में पहुंचना और मार्च 2008 तक राजकोषीय घाटे को जी॰डी॰पी॰ के 3 प्रतिशत तक सीमित करना था। हालांकि वर्ष 2007 के अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संकट के कारण इस ऐक्ट की सिफारिशों पर पूर्णतया अमल नहीं हो पाया। देश में शिक्षा नामांकन अनुपात बढ़ाने के उद्येश्य से 'सर्व शिक्षा अभियान' योजना की वर्ष 2001 में शुरूआत करना वाजपेयी जी के कार्यकाल की एक और बड़ी उपलब्धि रही।

अर्थव्यवस्था के चतुर्दिक विकास के लिए अच्छी सडकों के महत्व से वाजपेयी जी भलीभांति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने गांवों को शहरों से जोड़ने के लिए 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' की शुरूआत की जिसके तहत बनी ग्रामीण सड़कों की आम जन में बड़ी प्रशंसा होती रही है। साथ ही श्री वाजपेयी के कार्यकाल में ही स्वर्णिम चतुर्भुज योजना की भी शुरूआत हुई जिसने चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली एवं मुम्बई को हाईवे नेटवर्क से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वाजपेयी सरकार की इन दो महत्वाकांक्षी परियोजनाओं ने देश के आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वाजपेयी सरकार द्वारा वर्ष 2000 में 'एक देश एक कर' की अवधारणा को साकार रूप देने के दृष्टिकोण से पश्चिम बंगाल के वित्त मंत्री श्री असीम दास गुप्ता की अध्यक्षता में ळैज् का मॉडल डिजाइन करने के लिए समिति का गठन करना देश की अर्थव्यस्था को मजबूती प्रदान करने वाला एक अन्य दूरदर्शी कदम था। इसी प्रकार वाजपेयी सरकार ने अपनी नई टेलीकॉम पॉलिसी के तहत टेलीकाम फर्मों के लिए एक तय लाइसेंस फीस हटाकर रेवन्यू शेयरिंग की व्यवस्था लागू की। वर्ष 2000 में भारत संचार निगम का गठन भी वाजपेयी सरकार का एक क्रान्तिकारी कदम था।

❋❋❋❋❋❋

भारतरत्न अटलबिहारी वाजपेयी: भारतीय राजनीति में अप्रतिम योगदान

डॉ0 सारिका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
इंदिरा गाँधी राजकीय महिला महविद्यालय रायबरेली
Email ID: ssarika81@gmail.com, MOB: 8869938511

भारतीय लोकतंत्र जिसे विश्व का सबसे विशाल एवं स्पंदनशील तथा तृतीय विश्व का सबसे विशाल व सफल लोकतंत्र माना जाता है, के विकास में अनेक राजनैतिक नेतृत्व कर्ताओं का अवदान रहा है | भारतीय लोकतंत्र को यहां तक लाने और उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सफल लोकतंत्र के रूप में शिखर तक पहुंचाने में जिन माननीय राजनीतिक नेतृत्व कर्ताओं की भूमिका रही है अटल बिहारी वाजपेयी जी उनमें प्रमुख हैं | भारतीय राजनीति में एक सांसद, एक नेता प्रतिपक्ष ,एक विदेश मंत्री, एक राजनीतिक दल के संस्थापक अध्यक्ष और अंततः तीन बार प्रधानमंत्री के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन किया | इन राजनीतिक भूमिकाओं से इतर वे विदेश नीति के गंभीर जानकार ,लोकतांत्रिक मूल्यों के पक्षधर राजनीतिक कुरीतियों पर कुठाराघात करने वाले व्यंग्यकार और अपनी दलीय निष्ठा से ऊपर उठकर सकारात्मक राजनीति करने वाले नेताओं के प्रशंसक रहे |

अटल बिहारी वाजपेयी जी अपने अभियान में जुटे रहने वाले व्यक्ति थे, जो अपनी दृष्टि, शब्दों और कर्मों से आम सहमति बनाने वाले महान नेता बने | वह गठबंधन वाली सरकार, सामंजस्य की राजनीतिक तथा समावेशी विकास के जनक बने | अटलजी ने दुनिया को अटल की मिसाल के नए राजनीतिक व्यवहार को दिखाया है|वे भारतीय राजनीति के उन नेतृत्व कर्ताओं में से हैं जिन्होंने लगभग सभी महत्वपूर्ण दायित्व में भूमिका का निर्वहन किया और भारतीय राजनीति को नवीन दिशा और दशा प्रदान की भारतीय लोकतंत्र को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में उनकी महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका रही है। भारत राष्ट्र व हम भारतीय उनके सदैव ऋणी रहेंगे ।

प्रस्तुत शोध पत्र (सारांश) में भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेयी जी द्वारा निर्वहन की गई विभिन्न भूमिकाओ का विश्लेष्ण किया गया है।

❋❋❋❋❋❋

अटल बिहारी बाजपेई का व्यक्तित्व और कृतित्व

विशाखा कमल
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
नेताजी सुभाष चंद्र बोस गवर्नमेंट गर्ल्स पीजी कॉलेज

भारत रत्न अटल बिहारी वाजप का राजनीतिक सफर अत्यंत उत्कृष्ट उपलब्धियों भरा रहा हैं 25 दिसंबर 1924 को जन्मे अटल बिहारी बाजपेई 1942 में राजनीति में उस समय आए जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके भाई 23 दिनों के लिए जेल गए 1951 में आर एस एस के सहयोग से भारतीय जनसंघ पार्टी का जब गठन हुआ तो श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे नेताओं के साथ अटल बिहारी बाजपेई की अहम भूमिका रही पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई देश के एकमात्र ऐसे राजनेता थे जो 4 राज्यों के 6 लोकसभा क्षेत्रों की सीटो पर विजेता रहे थे जिनमें से उत्तर प्रदेश के लखनऊ और बलरामपुर गुजरात के गांधीनगर मध्य प्रदेश के ग्वालियर और विदिशा और दिल्ली की नई दिल्ली संसदीय सीट से चुनाव जीतने वाले एकमात्र नेता रहे उनका राजनीतिक सफर अत्यंत उत्कृष्ट उपलब्धियों से भरा रहा है अटल बिहारी बाजपेई एक ऐसे नेता थे जो कि विरोधियों में भी अपनी धाक रखते थे बाजपेई के असाधारण व्यक्तित्व को देखकर उस समय के वर्तमान प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि आने वाले दिनों में यह व्यक्ति जरूर प्रधानमंत्री बनेगा उनका यह कथन आगे आने वाले समय में सत्य सिद्ध हुआ

❋❋❋❋❋❋

शक्ति से शान्ति तक "अटल बिहारी बाजपेयी"

डॉ स्नेहा सिंह
(असिस्टेट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग)
इंदिरा गाँधी राजकीय महिला महाविद्यालय रायबरेली
मो0नं0 8381806666, Email: sneha7a@gmail.com

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व बहुमुखी था, जहाँ एक ओर वे मर्मज्ञ कवि, विचारक, मानवता के पक्षपोषक एवं सहृदय व्यक्तित्व के स्वामी थे, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की सुरक्षा एवं सम्प्रभुता की रक्षा हेतु सुदृढ एवं कूटनीतिक निर्णयों के लेने में भी दक्ष थे। उनके व्यक्तिव का उदार पक्ष उनकी कविताओं, मानवीय मूल्यों आदि से उद्घाटित होता है, वहीं उनके व्यक्तित्व का सुदृढ़ पक्ष उनके द्वारा लिये गये प्रमुख निर्णयों कारगिल युद्ध, पोखरण परीक्षण (ऑपरेशन शक्ति) कांधार विमान अपहरण आदि घटनों में परिलक्षित होता है। अटल जी ने भारत के शान्ति दूत की छवि को धूमिल नहीं होने दिया साथ ही विश्व को इस तथ्य से भी अवगत कराया कि भारत अपनी सुरक्षा एवं सम्प्रभुता के संदर्भ में किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगा। सन् 1998 में पोखरण परीक्षण के उपरान्त भारत की शान्ति दूत की छवि पर वैश्विक एवं आंतरिक दोनों ही पक्षों से प्रहार हो रहा था तो अटल जी ने संसद में सम्बोधित करते हुए पूछा था कि "देश को राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में आत्मनिर्भर क्यों नहीं होना चाहिए"। अटल जी ने इस साहसिक कदम की आलोचना से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का तार्किकता से उत्तर दिया। इसी तरह कारगिल युद्ध में भी भारत ने अपना लोहा विश्व में मनवाया था। बिल क्लिटंन ने अटल जी को युद्ध विभीषिका के सम्बन्ध में जब सचेत किया तो उन्होनें जवाब दिया कि "मै इस बात को लेकर आश्वस्त हूँ कि भारत का 50 प्रतिशत हिस्सा समाप्त हो जायेगा परन्तु यह भी जान लीजिये कि यदि परमाणु हमला हुआ तो पाकिस्तान का नामों निंशा मिट जायेगा"।

अटल जी जहाँ एक ओर राष्ट्र की सुरक्षा एवं सम्प्रभुता के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार के समझौते के विरुद्ध थें वहीं दूसरी ओर मानवतवाद एवं भारत के शान्ति दूत की छवि को भी बनाये रखने के सुदृढ़ समर्थक थे। उनके जीवन का एक पक्ष जो मर्मज्ञ कवि, मानवतावाद का समर्थक, साधन एवं साध्य की सुचिता एवं गरिमा का पक्षधर था, वहीं देश की सुरक्षा लिये गये कठोर निर्णय उनके व्यक्तित्व के दूसरे पक्ष अर्थात देश की अखण्डता एवं सुरक्षा के प्रतिबद्धता को उजागर करता है। जहाँ एक ओर देश की रक्षा हेतु वे शक्ति के पक्षधर थे वहीं दूसरी ओर मानवतावाद के पक्षपोषक के रूप में वे शन्ति के अग्रदूत थे।

प्रस्तुत शोध सारांश में अटल बिहारी वाजपेयी जी के बहुमुखी व्यक्तित्व (जिसका एक पक्ष शान्ति का पक्षधर था वही उनके व्यक्तित्व का द्वितीय पक्ष राष्ट्र की सुरक्षा हेतु शक्ति के पक्ष का अनुसरण करने का समर्थक था) का विश्लेषण किया गया है।

❋❋❋❋❋❋

साहित्य प्रेमी एक कवि- अटल बिहारी वाजपेयी

डॉ. ऊषा देवी
एसो0 प्रो0 इतिहास विभाग
विद्यान्त हिन्दू पी0जी0 कालेज लखनऊ।

भारत के सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित भारत के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र, समाज, राजनीति, साहित्य एवं लेखन को समर्पित रहा। वह एक महान वक्ता, नेता, पत्रकार, लेखक और कवि रहे। अपनी अभिरूचि अनुसार कविता लिखना, संगीत सुनना, पढ़ना, भारतीय संस्कृति का अध्ययन, यात्रा करना प्रमुख कार्य करते थे। वे अपने तर्कशील भाषण तथ्यों, एवं कविताओं, विचारों व प्रभावशाली टिप्पणियों के लिए जाने जाते है। वे भारत के तीन बार प्रधानमंत्री बने, उनके कार्यकाल में पोखरण में सफल परमाणु परीक्षण, 'आपरेशन शक्ति' हुआ, पाकिस्तान के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लाहौर बस यात्रा प्रारम्भ की, वह एक उत्कृष्ट सम्पादक और कवि रहे। 25 दिसम्बर, 1924

को जन्म लेने वाला एक महान व्यक्ति का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न था और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए 93 वर्ष की आयु में अगस्त 2018 को मृत्यु को प्राप्त हो गया।

प्रस्तुत शोध पत्र में अटल बिहारी वाजपेयी के राजनैतिक स्वरूप के साथ-साथ उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है। वह एक राष्ट्रनेता के साथ-साथ एक सम्पादक, लेखक व कवि थे जिसने राष्ट्र को प्रेरित किया।

कूट शब्द- साहित्य, नेता, संरक्षक, अध्यक्ष, पार्टी, कवि, लेखक, हिन्दी, भाषण, टिप्पणी।

❋❋❋❋❋❋

अटल जी का व्यक्तित्व युगों - युगों तक प्रासांगिक एवं अनुकरणीय

डॉ. उषा मिश्रा
सहायक आचार्य - संस्कृत
नेता जी सुभाष चन्द्र बोस रा.म.स्ना.महाविद्यालय अलीगंज लखनऊ उ.प्र.

कवि और राजनेता के समन्वित व्यक्तित्व वाले श्री अटल बिहारी बाजपेई को समाज-देश, पड़ोसी देश, राजनैतिक पक्ष - विपक्ष, विज्ञान आदि विविध क्षेत्रों से जो अनुभूतियां प्राप्त हुई, उन अनेकानेक अनुभूतियों को अपनी लेखनी से साहित्य अथवा काव्य का रूप देने वाले वैज्ञानिक विचारधारा रखनें वाले, संवेदनशील ह्दय, वाकपटु राजनेता, सामाजिक सेवाभाव के अंतः करण से युक्त भारत देश के प्रधानमंत्री पद पर तीन बार शपथ लेने वाले स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेई जी को भारतीय गणराज्य के सर्वोच्च नागरिक के रूप में "भारत रत्न" सम्मान से नवाज़ा गया। हम यहां बात कर रहे हैं - "भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की।"

"भारत रत्न" यह दो पद हैं प्रथम पद "भारत" दो शब्दों भा और रत् से मिलकर बना है। इसमें भा-भा+अङ्+टाप् प्रत्यय से मिलकर निर्मित है। जिसका अर्थ है-"ज्ञानरूपी प्रकाश" "रत्" पद का अर्थ है - "संलग्न, लीन, प्रवृत्त"। इस प्रकार भारत पद का अर्थ है "वह भूमि जिसके निवासी निरन्तर खोज में लगें हो" "रत्न" से तात्पर्य बहुमूल्य चिकनें पदार्थ से है, इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति अपने वर्ग जाति में श्रेष्ठ/उत्तम हो उसे ही रत्न कहा जाता है। लेकिन इसके दोनों अर्थो मे से हम दूसरे अर्थ को अटल जी के संदर्भ में सटीक मानते हैं। " एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि पर साहित्य ,विज्ञान, कला, राजनीति, समाज के क्षेत्र में नित् नवीन खोज में प्रवृत्त हो वह व्यक्ति "भारत रत्न सम्मान" को प्राप्त करने का अधिकार रखता है।" ऐसे ही अन्वेषणात्मक व्यक्तित्व एवं काव्य सर्जना के धनी श्री अटल बिहारी वाजपेई जी थे। भारत रत्न सम्मान जिसको मिला हो उसका व्यक्तित्व प्रत्येक क्षेत्र में कितना विशाल होगा, इसे हम सब महसूस कर सकतें है। इसके अतिरिक्त अटल जी अपने नाम के अनुरूप दृढ़ संकल्प हो कार्यों का संपादन करते थे, चाहे उनके मार्ग में कितने ही रोडे क्यों ना आए हो, कितनी ही बाधाएं क्यों ना आई हो, वे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले अटल जी कभी भी अपने मार्ग च्युत नहीं हुए। अटल जी के व्यक्तित्व के विषय में मुझें कुछ पंक्तियां याद आ रही कि -

(1)
बाधाएं कब बांध सकी हैं,
आगे बढ़ने वाले को।
विपदायें कब रोक सकी है,
मर कर जीने वाले को।।

(2)
मुश्किलें दिल के इरादें आजमाती है,
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती है।
हौंसला मत हार ओ मुसाफिर,
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं।

ऐसे अटल संकल्प वाले श्री अटल बिहारी बाजपेई की सशक्त जीवन शैली, कार्यशैली कभी भी रूकने वाली नहीं थी। दृढ़ प्रतिज्ञ अटल जी का जन्म संघ के प्रति निष्ठावान, अध्ययन-आध्यापन, कवित्व ह्दय रखनें वाले, वैदिक सनातन धर्मावलम्बी कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। जिसकारण से वंशानुक्रम और वातावरण दोनों के सम्मिलित रूप ने अटल जी को बाल्यावस्था में ही प्रखर राष्ट्रप्रेमी

तथा सुसंस्कारित कवि बना दिया था। अटल जी को देश प्रेम, जीवन-दर्शन,, प्रकृति तथा मधुर भावो वाली कवितायें बचपन से ही आकृष्ट करती रही।

सन 1939 में अटल जी आठवीं अथवा नवीं कक्षा के छात्र हुआ करते थे, उसी समय इन्होंने अपनी पहली कविता ताजमहल पर लिखी थी, जो कि इसमें ताजमहल की सुंदरता का वर्णन ना करके इन्होंने सुंदर ताजमहल का निर्माण करने वाले श्रमिकों के कलात्मक हाथों की दास्ता अपने व्यथित हृदय से बयां की थी-

यह ताजमहल, यह ताजमहल
यमुना की रोती धार विकल
कल-कल, चल-चल
जब रोया हिंदुस्तान सकल
तब बन पाया ताजमहल
यह ताजमहल, यह ताजमहल।।

हाई स्कूल में अध्ययनरत अटल जी ने एक दूसरी कविता की रचना की थी, जिससे स्पष्ट होता है कि अटल जी को अपने हिंदू होने का अत्यंत गर्व था -

"हिंदू तन - मन, हिंदू जीवन, रग - रग हिंदू मेरा परिचय।"

अटल जी के आरंभिक जीवन से लेकर अंतिम समय तक इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययनोपरान्त जितना मै समझ सकी हूँ, वह यह की अटल जी शांत स्वभाव एवं शांति के पक्षधर, हाजिर जवाब थे। यह देश के भीतर ही नहीं बल्कि बाह्य देशों के साथ भी शांति- अमन-चैन का संबंध चाहते थे, किंतु छेड़ने वाले को छोड़ते भी नहीं थे, बल्कि अपने ओजस्वी पूर्ण वाणी ओज गुणप्रधान शैली वाली कविताओं से ललकारते हुए मुस्कुरा कर करारा जवाब देते थे। अटल जी समाज और राष्ट्र के अनुभूतियों को विविध रसों के माध्यम से शब्दों को पंक्तिबद्ध कर दिया करते थे। इनकी प्रत्येक कविता लेख कोई ना कोई गाथा का उल्लेख करती है, हमें कोई ना कोई संदेश, कुछ ना कुछ प्रेरणा, राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत करना, शहीदों का स्मरण, पूर्व में घटित घटनाओं के इतिहास का उद्बोधन कराने वाली वर्तमान में भी निराशा हताशा से मुक्ति दिलाने वाली है। अटल जी की कुछ कविताएं समाज की सच्चाई को परोसते हुए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देती हैं। यथा –

(1)
बेनकाब चेहरे हैं,
दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलस्म, आज सच से भय खाता हूँ।
गीत नहीं गाता हूँ।
लगी कुछ ऐसी नज़र,
बिखरा शीशे सा शहर,
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूँ।
गीत नहीं गाता हूँ।
(2)
हार नहीं मानूंगा,
रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूं।

आज भी इनकी कविताएं इतनी सशक्त एवं प्रासंगिक है कि किसी भी व्यक्ति को निराशा से छुटकारा दिलाकर कर्म के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने का कार्य करती।

इससे स्पष्ट होता है कि अटल जी सदा से आशावादी कवि रहें, निराशा इन्हें छू भी नहीं पाती थी। इनकी कविताओं में उदार राष्ट्रवाद की अवधारणा दृष्टिगोचर होती है। अटल जी अपने लेखन के लिए देश विभाजन, समाज की चुनौतियों - समस्याओं, स्वतंत्रता, आपातकाल, जीवन - दर्शन, राष्ट्रीय संस्कृति - सभ्यता, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक अनुभवों को विषय बनाया है।

अतः हम कह सकते हैं कि अटल जी वास्तव में एक नव उन्मेषिनी प्रतिभासम्पन्न, प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक और संपादक के रूप में संपूर्ण देश में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में विख्यात है। अटल जी अपराजित वक्ता, संवेदनशील विचारवान कवि-लेखक तथा राष्ट्रभक्त व्यक्तित्व के थे।

यदि यह कहा जायें कि अटल जी का व्यक्तित्व वर्तमान में प्रासंगिक है और युगो - युगों तक अनुकरणीय होगा तो यह तनिक भी गलत नहीं होगा।

✻❉✳✻❉✳

भारतीय राजनीति एवं अटल बिहारी बाजपेयी

डॉ0 हिमांशु द्विवेदी
असि0 प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग
राम लखन सिंह यादव कॉलेज, बख्तियारपुर, बिहार

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी अटल बिहारी बाजपेयी का सार्वजनिक जीवन बहुत ही वेदाग एवं साफ सुथरा था। उनके लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा। 1996 में लोकसभा में उन्होंने कहा था कि "सरकारे आएगी जाएगी, पार्टिया बनेगी और बिगड़ेगी परंतु ये देश चलते रहना चाहिए"। अटल जी का राजनीतिक जीवन 1942 में भारत छोड़ों आन्दोलन के समय से शुरू हुआ। एक लोकप्रिय नेता के रूप में अटल जी संसदीय परंपराओं संस्कृति उसके मूल्यों एवं अपने राजनीतिक कर्त्तव्यों के प्रति हमेशा सजग रहे हैं। संसद की प्रमुख समितियों जैसे- लोकलेखा समिति, विदेश मामलों की स्थायी समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्यशैली के नये आयाम प्रस्तुत किये। 1951 में भारतीय जनसंघ पार्टी के गठन में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ अटल जी की अहम भूमिका रही। वे संसद में जनसंघ के अग्रणी नेता थे और 1968 से 1973 तक उसके अध्यक्ष रहे आपातकाल का मुखर विरोध करने के साथ-साथ जब भारतीय जनसंघ पार्टी का जनता पार्टी में विलय हो गया और मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने उस समय अटल जी को विदेश मंत्री जैसा सम्मानजनक पद मिला। 1980 में जनता पार्टी से असंतुष्ट होकर जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में मदद की और 1980 से 1986 तक भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे। भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी देश के एक मात्र राजनेता थे जो चार राज्यों, उत्तर प्रदेश के लखनऊ और बलरामपुर, गुजरात के गाँधी नगर, मध्य प्रदेश के ग्वालियर एवं विदिशा और दिल्ली की नई दिल्ली संसदीय सीट से चुनाव जितने वाले नेता थे। वे राजनीति के क्षेत्र में चार दशकों तक सक्रिय रहे वह लोकसभा में नौ बार और राज्यसभा में दो बार चुने गए जो अपने आप एक कीर्तिमान है। लोकतंत्र के सजक प्रहरी अटल जी ने 1996 में प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली। 1998 को पुनः प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और उनके नेतृत्व में 13 दलों की गठबंधन सरकार ने 5 वर्षों में देश के अंदर प्रगति के अनेक आयाम छुवे। पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो लगातार दो वार प्रधानमंत्री बने। भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष अटल जी की ईमानदार छवि के कारण विरोधी दल के नेता भी उन्हें भरपूर मान सम्मान दिया करते थे। उनकी ईमानदारी, शालीनता, सादगी, सौम्यता और कविताओं ने भारत के युवाओं को एक नयी प्रेरणा दी।

✻❉✳✻❉✳

प्रखर राजनेता जन नेता अटल बिहारी बाजपेयी

डॉक्टर सीमा रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान
बी डी म.म. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिकोहाबाद

भारतीय राजनीति में अनेक राजनेता हुए, परंतु एक राजनेता जन नेता भी हो यह आवश्यक नहीं, यदि हम पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई की बात करें तो निसंदेह यह कहा जा सकता है कि वह जन नेता थे उन्होंने अपने कृत्यों से कविताओ से राजनीतिक निर्णय से, उदार व्यक्तित्व बोलने की शैली से भारतीय जनता के हृदय को स्पर्श किया।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में अपनी राजनीतिक यात्रा का अटल बिहारी वाजपेयी ने आरंभ किया और आने वाले दिनों में अपने व्यक्तित्व से सभी को इतना प्रभावित किया कि तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि अटल बिहारी वाजपेई एक दिन देश के प्रधानमंत्री बनेंगे और उनकी बात सच हुई वे 3 बार देश के प्रधानमंत्री बने और देश के एकमात्र ऐसे राजनेता जिन्होंने चार राज्य में 6 लोकसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किया।

उनके कार्यकाल को महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय के लिए जाना जाता है वर्ष 1998 में भारत द्वारा किया गया परमाणु परीक्षण को इस संदर्भ में देखा जा सकता है यह भारतीय राजनीति में 1 मील का पत्थर साबित हुआ यद्यपि पोखरण परीक्षण के बाद पाश्चात्य देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए परंतु वह 2001 तक समाप्त भी हो गए।

अटल बिहारी वाजपेई जी ने पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को सुधारने का प्रयत्न भी किया पाकिस्तान के संदर्भ में लाहौर समझौते को देखा जा सकता है वर्ष19 99 में शुरू की गई लाहौर बस सेवा के अंतर्गत वह पाकिस्तान भी गए, भारत में उनकी इस यात्रा का विरोध भी किया गया परंतु अटल बिहारी वाजपेई ने पड़ोसी मुल्क की जनता के दिल को जीत लियालिया1 वरिष्ठ पत्रकार किंग शुक्र नाग ने वाजपेई पर लिखी अपनी पुस्तक ऑल सीजंस मैन मैं लिखा है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा था कि वाजपेई अगर पाकिस्तान से चुनाव लड़ते हैं तो निश्चित रूप से जीत जाएंगे। परंतु यह दुखद रहा था कि, भारत में लाहौर के पश्चात कारगिल संघर्ष का सामना करना पड़ा और सरकार को आलोचना का सामना करना पड़ा1 कंधार हाईजैक मामला और संसद पर हमले जैसी घटनाओं ने भी भाजपा सरकार पर प्रश्न खड़े किए अटल बिहारी बाजपेई ने युवा शक्ति और शिक्षा के महत्व को भी बड़ी बात समझा उनका स्पष्ट मानना था कि अगर भारत को विकास करना है तो उसे शिक्षित और अनुशासित युवाओं को तैयार करना पड़ेगा शिक्षा की प्रभु व्यापकता के लिए उनके द्वारा वर्ष 2001 में आरंभ किया अभियान आज ही महत्व रखता है देश के उनके द्वारा आरंभ की गई भारत जोड़ो परियोजना और नदी जोड़ो परियोजना स्थित है।

❋❋❋❋❋❋

अटल बिहारी वाजपेई और मानववाद

भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री परम श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी मानवता के अग्रदूत थे। उन्होंने अपने जीवन में न कभी इंसानों में भेद किया न धर्म में, न जाति में वे हमेशा से ही मानवता के पक्षधर थे। उनका कहना था कि मनुष्य जीवन अनमोल निधि है, इसलिये इंसान बनो केवल नाम से नहीं, हृदय और बुद्धि से नहीं, बल्कि ज्ञान से। हम केवल अपने लिये न जिये बल्कि औरों के लिये भी जियें। इसी तरह उन्होंने धर्म के सदंर्भ में कहा कि मुझे अपने हिन्दुत्व पर अभिमान है, किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मैं मुस्लिम विरोधी हूँ। अटल बिहारी वाजपेयी जी सादगी और मानवता के प्रति प्रेम और संवेदना के अद्वितीय मिश्रण थे। शांति के दूत और मानवता के प्रतीक अटल जी ने निस्वार्थ भाव से देश की सेवा की और वे मानवतावाद तथा सहिष्णुता के सिद्धान्तों पर सदैव अडिग रहे। इनका पूरा जीवन निर्धनों और वंचितों की सेवा के लिये समर्पित रहा। इसके अनेक उदाहरणों में से एक उदाहरण 1984 के दंगों में जब मौत का नंगा नाच खेला जा रहा था, मानवता मर रही थी तब सिक्खों के लिए फरिश्ता बनकर आये थे वाजपेयी जी। इसी तरह पाकिस्तान के साथ सीधा युद्ध पर उनकी सहमति कभी नहीं बनी, क्योंकि इससे किसी का हित नहीं बल्कि, नुकसान मानवता का होगा। सरहदें और सियासतें तो बिगड़ कर फिर बन सकती हैं, लेकिन मानवता का क्या होगा? इन्हीं वजहों से बहुप्रतिभा के धनी अटल जी, हमारे देश के लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत्र रहेंगे।

✻❉✳✻❉✳

अटल बिहारी वाजपेयी: बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी भारतीय, राजनीति के अजातशत्रु

मोनिका अवस्थी
असिस्टेंट प्रोफेसर
एपी सेन मेमोरियल गर्ल्स डिग्री कॉलेज यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ।
mmonica.ggic@gmail.com

इस महान भारत देश में अनेक साधु-संतों ऋषि-मुनियों और महान आत्माओं ने जन्म लिया है। भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक विकास की इस स्वर्णिम यात्रा में अनगिनत लोगों ने राष्ट्र की सेवा में स्वयं को समर्पित किया है। परंतु स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र की रक्षा तथा 21 वीं सदी में भारत को एक सुरक्षित, सशक्त और आधुनिक राष्ट्र बनाने में अटल बिहारी जी का योगदान अभूतपूर्व है। अटल जी ऐसे एक अकेले नेता हैं, जिन्हें भारत के चार अलग-अलग राज्यों उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, गुजरात और दिल्ली से लोकसभा के चुनाव जीतकर संसद में पहुंचने का गौरव प्राप्त है। एक प्रधानमंत्री के तौर पर वाजपेयी जी का कार्यकाल अत्यंत गौरवशाली रहा है। यही कारण है कि लगभग डेढ़ दशक बीत जाने के बाद भी उनके प्रधानमंत्रित्व काल को न केवल याद किया जाता है बल्कि उनकी नीतियों तथा रीतियों पर अमल भी किया जाता रहा है। उनके समय के महत्वपूर्ण निर्णयों पोखरण का परमाणु परीक्षण, स्वर्णिम चतुर्भुज जैसी आधारभूत संरचना के विकास की बड़ी परियोजना, गरीबों वंचितों और शोषितों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए उनके समय प्रारंभ की गई सरकारी योजनाओं का समाज तथा राष्ट्र के विकास पर अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

✻❉✳✻❉✳

हिन्दी साहित्य और अटलजी की कविताएं

डॉ०राघवेन्द्र मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय 'आशियाना' लखनऊ

भारतीय राजनीति के जाज्वल्यमान नक्षत्र स्मृति शेष भारत रत्न माननीय अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा भारतीय राजनीति में दिये गये अवदान से तो अखिल विश्व परिचित और चमत्कृत है ही, साथ ही उनकी कविताएँ भी हिन्दी कविता की सुदीर्घ परम्परा में श्रीवृद्धि करते हुए अपना अमूल्य योगदान देती हैं। अटलजी को कविता विरासत में मिली थी। इनके पिता स्व० कृष्ण बिहारी बाजपेयी जी भी एक श्रेष्ठ कवि थे। अटलजी की रचनाओं का स्वर प्राय: राष्ट्रवादी रहा है। साथ ही उन्होंने राजीनितिक स्तर पर उपजे हालातों पर भी कविताएं लिखी हैं। उनकी कई रचनाएं उनकी तत्कालीन मन:स्थिति की उपज हैं। उदाहरण स्वरूप सन् 1980 ईस्वी में जनता पार्टी के विघटन के बाद अटल जी अपनी कविता में लिखते हैं-

"बेनकाब चेहरे हैं
दाग बड़े गहरे हैं
टूटता तिलस्म आज
सच से भय खाता हूँ
गीत नहीं गाता हूं।"

भाजपा का गठन होने के बाद परिस्थिति बदलती है और अटल जी की मन: स्थिति भी बदल जाती है। वह लिखते हैं-

"गीत नया गाता हूँ-2
टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर पत्थर की छाती पर उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात

कोयल की कूक रात
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूं
गीत नया गाता हूँ।"

अटलजी की कविताएं समग्रत: हिन्दी साहित्य के किसी 'वाद' या 'काल विशेष' से प्रेरित नहीं हैं किन्तु जब वे किसी नंगे-भूखे, निर्धन को फुटपाथों पर देखते हैं तो उनका प्रगतिशील स्वर मुखरित हो उठता है -

"15 अगस्त का दिन कहता
आज़ादी अभी अधूरी है
सपने सच होने बाकी हैं
रावी की शपथ न पूरी है
जिनकी लाशों पर पग धरकर
आज़ादी भारत में आयी
बे अब तक हैं खानाबदोश
ग़म की काली बदली छायी।"

अटलजी की शताधिक ऐसी रचनाएं हैं जो आज भी राष्ट्र की जुबान पर हैं। इनके पुनर्मूल्यांकन से निश्चित ही हिन्दी साहित्य की समृद्धिशाली परम्परा में नये अध्याय जुड़ सकते हैं,ऐसा मेरा विश्वास है।

❊❊❊❊❊❊

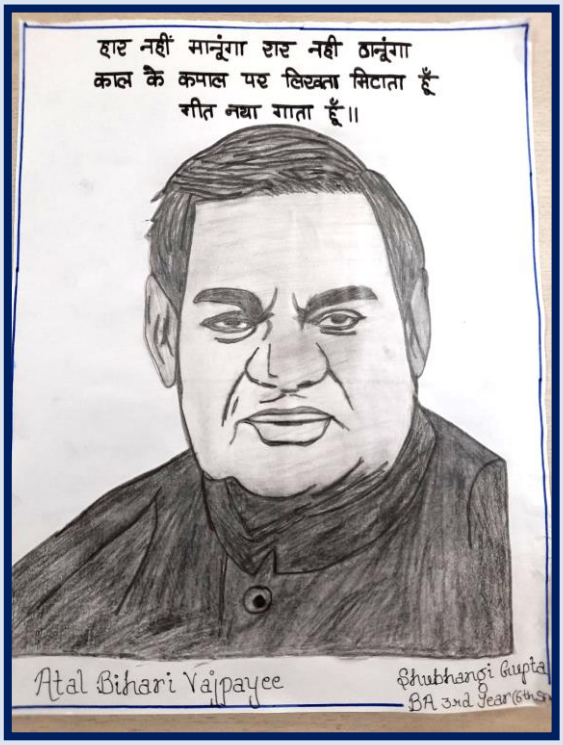
हार नहीं मानूंगा रार नहीं ठानूंगा
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ ॥
Atal Bihari Vajpayee
Shubhangi Gupta
BA 3rd Year

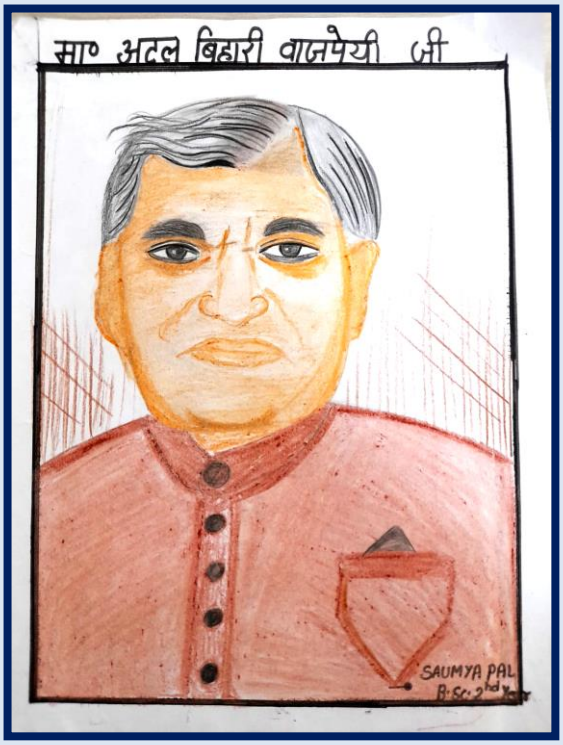
सा० अटल बिहारी वाजपेयी जी
SAUMYA PAL
B.Sc. 2nd Year

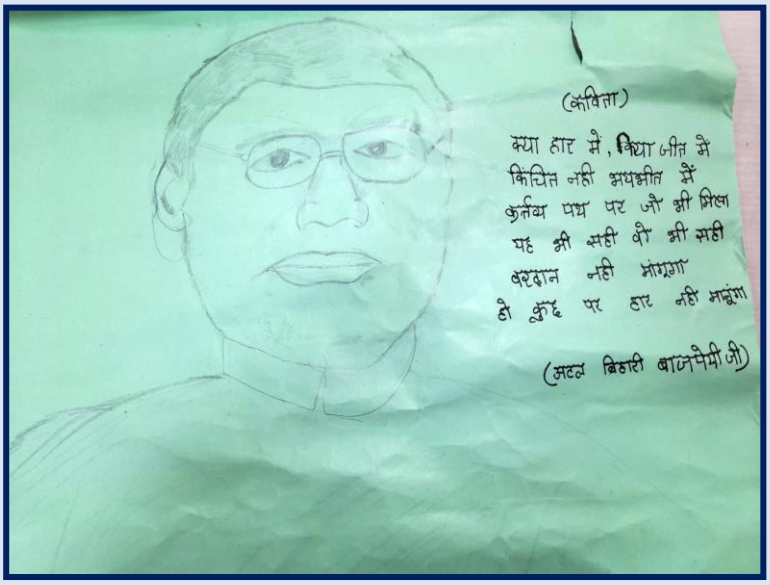
(कविता)
क्या हार में, क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
कर्तव्य पथ पर जो भी मिला
यह भी सही वो भी सही
वरदान नहीं मांगूंगा
हो कूद पर हार नहीं मानूंगा
(अटल बिहारी वाजपेयी जी)

Shiva Pandey
B.A. 1st
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूं
लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं
— अटल बिहारी बाजपेयी